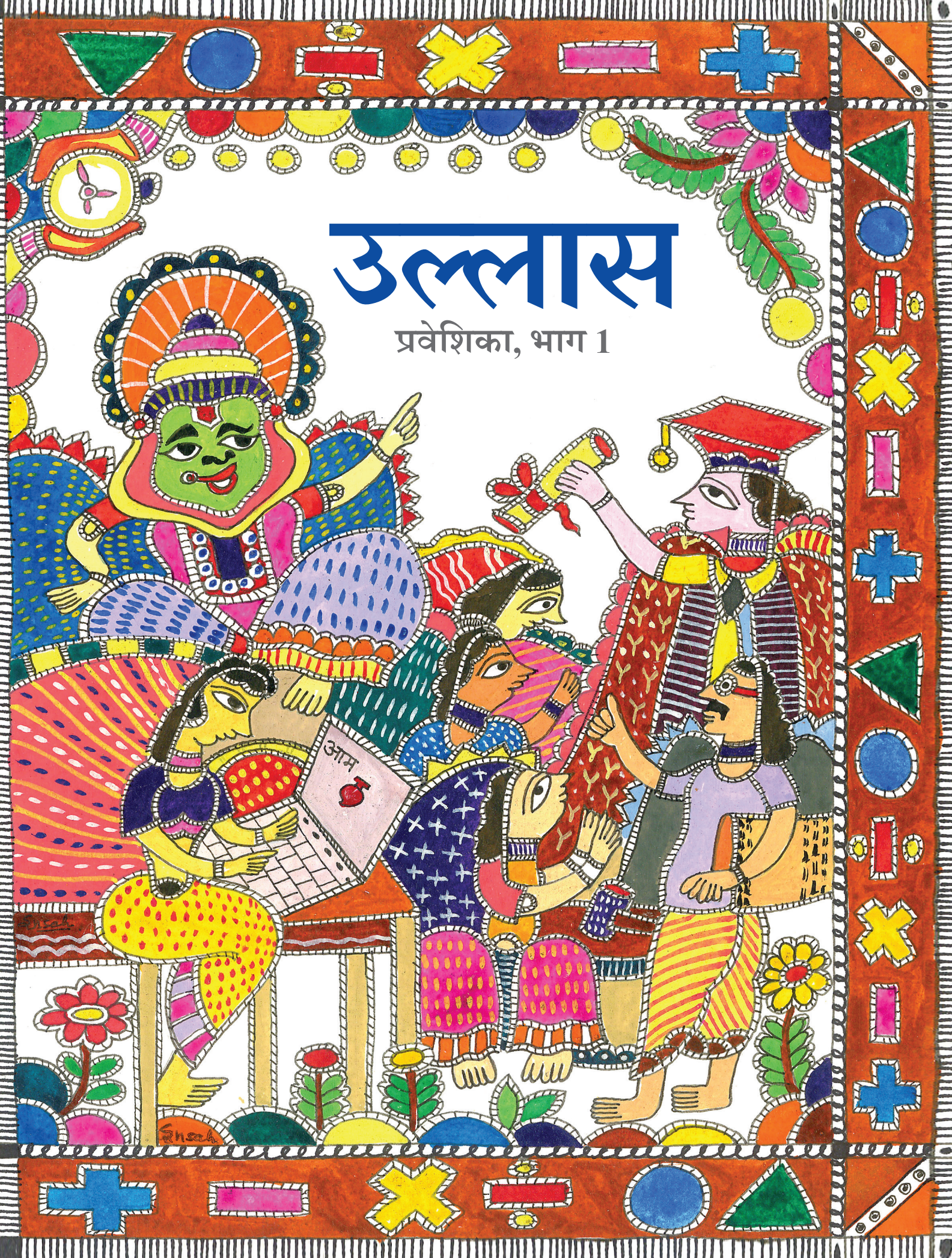
# उल्लास

## प्रवेशिका, भाग 1






उल्लास ULLAS

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING




उल्लास ULLAS

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

# उल्लास

## प्रवेशिका, भाग 1

13274



विद्ययाऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

13274 – उल्लास—प्रवेशिका, भाग 1

ISBN 978-93-5292-543-8

**प्रथम संस्करण**

*अगस्त 2024 श्रावण 1946*

**PD 1T M**

*© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2024*

**₹ 185.00**

*एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 100 जी.एस.एम. आर्ट पेपर पर मुद्रित।*

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा दिलप्रीत पब्लिशिंग हाऊस, एफ-198, विष्णु गार्डन, नई दिल्ली-110018 द्वारा मुद्रित।

**सर्वाधिकार सुरक्षित**

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फ़ोटो प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

**रा.शै.अ.प्र.प. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय**

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
**नई दिल्ली 110 016** फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
**बेंगलुरु 560 085** फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
**अहमदाबाद 380 014** फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट : धनकल बस स्टॉप पिनहटी
**कोलकाता 700 114** फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
**गुवाहाटी 781 021** फोन : 0361-2676869

**प्रकाशन सहयोग**

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अनूप कुमार राजपूत*

मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*

मुख्य संपादक : *बिज्ञान सुतार*

मुख्य व्यापार प्रबंधक : *अमिताभ कुमार*

सहायक संपादक : *मीनाक्षी*

सहायक उत्पादन सहायक : *दीपक कुमार*

**आवरण और सज्जा**

*सच्चिदानंद साह*

# आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पंद्रह वर्ष या उससे अधिक आयु वर्ग के उन सभी व्यक्तियों के साक्षर होने के प्रति सरोकार व्यक्त करती है, जो किन्हीं कारणों से साक्षरता और संख्या-ज्ञान अर्जित नहीं कर सके। इस संदर्भ में इस नीति की अनुशंसाओं के क्रियान्वयन के लिए 1 अप्रैल 2022 से भारत सरकार द्वारा 'उल्लास' प्रारंभ किया गया है, जिसमें वयस्क शिक्षा के सभी पक्ष शामिल हैं। 'उल्लास' का उद्देश्य न केवल आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता प्रदान करना है, बल्कि 21वीं सदी के नागरिक के लिए आवश्यक अन्य घटकों को भी शामिल करना है; जैसे— महत्वपूर्ण जीवन-कौशल (वित्तीय साक्षरता, डिजिटल साक्षरता, वाणिज्यिक कौशल, स्वास्थ्य देखभाल और जागरूकता सहित, शिशु देखभाल तथा शिक्षा एवं परिवार कल्याण), व्यावसायिक कौशल विकास (स्थानीय रोज़गार प्राप्त करने की दृष्टि से), बुनियादी शिक्षा (प्रारंभिक, मध्य और माध्यमिक स्तर की समकक्षता सहित) और सतत शिक्षा (कला, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, संस्कृति, खेल और मनोरंजन में समग्र प्रौढ़ शिक्षा पाठ्यक्रम के साथ-साथ स्थानीय शिक्षार्थियों के लिए रुचि या उपयोग के अन्य विषय; जैसे— महत्वपूर्ण जीवन-कौशल पर अधिक उन्नत सामग्री सहित)। इस प्रकार यह योजना मानव व्यक्तित्व के विकास को समग्रता में देखती है और न्यायसंगत, तर्कशील एवं उत्कृष्ट नागरिक के निर्माण की दिशा में कार्य करती है।

'उल्लास' का अर्थ है— समाज में सभी के लिए आजीवन सीखने की समझ (ULLAS — Understanding of Lifelong Learning for All in Society) और इसका आदर्श वाक्य है – जन-जन साक्षर। 'नव भारत साक्षरता कार्यक्रम' के दस्तावेज़ में यह उल्लिखित है कि "2011 की जनगणना के अनुसार देश में 15 वर्ष और उससे अधिक आयु वर्ग में गैर-साक्षरों की कुल संख्या 25.76 करोड़ (पुरुष 9.08 करोड़, महिला 16.68 करोड़) है। 2009–10 से 2017–18 के दौरान साक्षर भारत कार्यक्रम के तहत साक्षर के रूप में प्रमाणित व्यक्तियों की 7.64 करोड़ की प्रगति को ध्यान में रखते हुए, यह अनुमान लगाया गया है कि वर्तमान समय में भारत में लगभग 18.12 करोड़ वयस्क अभी भी गैर-साक्षर हैं।" राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 वर्ष 2030 तक 100 प्रतिशत साक्षरता प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित करती है और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) में राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र की स्थापना की अनुशंसा करती है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर अनेक प्रयास सतत जारी हैं।

यह संभव है कि 'उल्लास' में शामिल शिक्षार्थी साक्षर भले ही न हों, लेकिन वे शिक्षित होंगे और अपने जीवन के संघर्ष, चुनौतियों का सामना करने तथा उचित निर्णय लेने में सक्षम भी होंगे। ये शिक्षार्थी अपने जीवन के अलग-अलग संदर्भों में अपनी भाषा या भाषाओं का मौखिक प्रयोग भी करते हैं और गणितीय समझ के साथ अपने-अपने कामों में लेन-देन भी करते हैं। इन्हें केवल

पढ़ना-लिखना और संख्या-ज्ञान सीखने की आवश्यकता है, जिससे गुणवत्तापूर्ण एवं गरिमामय जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त हो सके।

साक्षरता एक व्यापक अवधारणा है, जो केवल अक्षर-ज्ञान या संख्या-ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि "विभिन्न संदर्भों में विषयों को दृश्य, श्रव्य और डिजिटल सामग्री का उपयोग करके पहचानने, समझने, रचने, गणना करने और संवाद करने की क्षमता है।" (अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता संघ (आई.एल.ए.) से उद्धृत)। इस रूप में बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान प्रकार्यात्मक है और जीवन को बेहतर तरीके से जीने में सहायक है।

"बुनियादी साक्षरता प्राप्त करना, शिक्षा प्राप्त करना और जीविकोपार्जन का अवसर प्राप्त करना प्रत्येक नागरिक का अधिकार है। साक्षरता और बुनियादी शिक्षा, किसी के वैयक्तिक, नागरिक, सामाजिक, आर्थिक और जीवनपर्यंत शिक्षा के अवसरों की एक नवीन दुनिया खोल देती है। यह नवीन दुनिया व्यक्ति को निजी और व्यावसायिक, दोनों ही स्तरों पर आगे बढ़ाने में मदद करती है।" राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के इस परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षा मंत्रालय के 'नव भारत साक्षरता कार्यक्रम' के अंतर्गत निरक्षर शिक्षार्थियों के लिए *उल्लास — प्रवेशिका* (चारों भाग) का निर्माण किया गया है। ये प्रवेशिकाएँ समेकित रूप में बनाई गई हैं, जिसमें भाषा और गणित दोनों विषय शामिल हैं। विषय सामग्री के रूप में 13 विषय (थीम) तय किए गए हैं, जो आमतौर पर हमारे आस-पास दिखाई देते हैं। ये विषय हैं — परिवार और पड़ोस, बातचीत, हमारा रहन-सहन, हमारे आस-पास, खान-पान और सेहत, मतदान, कानूनी जानकारी, मुसीबतें कैसी-कैसी, यात्रा, मनोरंजन, वित्तीय साक्षरता, डिजिटल साक्षरता, समय-समय की बात आदि। भाषा के अंतर्गत इन्हीं विषयों से जुड़ी सार्थक, समग्र और रोचक सामग्री तथा दिन-प्रतिदिन के हिसाब-किताब को लेते हुए, हिंदी भाषा और अंकगणित को पढ़ने-लिखने के अवसर जुटाए गए हैं। शिक्षार्थियों के पढ़ने-लिखने और अंकगणित सीखने में मदद के लिए एक मार्गदर्शिका का भी निर्माण किया गया है। यह मार्गदर्शिका शिक्षकों या सुगमकर्ताओं द्वारा उपयोग में लाई जाएगी, जो शिक्षार्थियों के सीखने में मदद करेगी। इस मार्गदर्शिका में साक्षरता का व्यापक परिप्रेक्ष्य, भाषा व गणित शिक्षण-बिंदु और सीखने-सिखाने की प्रक्रिया पर विस्तृत चर्चा की गई है। प्रवेशिकाओं और मार्गदर्शिका में दिए गए बिंदु सुझाव के तौर पर हैं। शिक्षार्थियों के स्तर, क्षमता, आवश्यकताओं और स्थानीय परिवेश को ध्यान में रखते हुए इनमें आवश्यकतानुसार बदलाव किया जा सकता है।

उल्लास—प्रवेशिकाओं में शामिल बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान संबंधी शिक्षण-बिंदुओं को केंद्र में रखते हुए शिक्षार्थियों या स्वयंसेवी शिक्षकों के लिए ऑनलाइन मॉड्यूल या वीडियो कार्यक्रमों का भी निर्माण किया गया है जो *दीक्षा* मंच (DIKSHA Portal) पर 'सभी के लिए शिक्षा' वर्टिकल और एनसीईआरटी के यूट्यूब चैनल (NCERTOFFICIAL) पर उपलब्ध हैं। मार्गदर्शिका और वीडियो कार्यक्रम की सहायता से शिक्षार्थियों को सीखने-सिखाने में मदद मिलेगी।

परिषद् प्रवेशिकाओं और मार्गदर्शिका के निर्माण में शामिल सभी विषय-विशेषज्ञों और परिषद् के संकाय सदस्यों व परियोजना-कर्मचारियों के अथक परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। साथ ही उन सभी रचनाकारों, संस्थाओं के प्रति भी कृतज्ञ है, जिन्होंने अपनी सामग्री सम्मिलित करने हेतु उदारतापूर्वक सहयोग दिया। इन प्रवेशिकाओं को और अधिक बेहतर बनाने के लिए आपके सुझावों का स्वागत है।

दिनेश प्रसाद सकलानी
*निदेशक*
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
*फरवरी 2024*

# प्रस्तावना

शिक्षित होना और साक्षर होना, दो अलग अवधारणाएँ हैं, जिन्हें एक बृहत्तर परिप्रेक्ष्य में देखा और समझा जाना चाहिए। साक्षर होने में, किसी भी भाषा में पढ़ने-लिखने की कुशलता सम्मिलित है तो संख्या-ज्ञान में अंक-ज्ञान समाहित है, जो मूलत: गणित की संक्रियाओं की ओर संकेत करता है। भाषा और गणित की अवधारणाएँ और विभिन्न संदर्भों में उनका विवेकपूर्ण प्रयोग ही अभीष्ट है। शिक्षित होने का संबंध विवेकशील होने, तर्कशील होने, मानवीय गुणों से परिपूर्ण होने, समाज के अनुकूल व्यवहार करने एवं सकारात्मक दृष्टिकोण रखने से है, जो जीवन की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम है। साक्षरता शिक्षित होने में सहायता करती है। इस प्रकार साक्षर होना, पढ़ना-लिखना और संख्या-ज्ञान सीखना हर व्यक्ति की एक बुनियादी आवश्यकता है, जो गरिमामय जीवन जीने में सहायता करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुशंसाओं के क्रियान्वयन के लिए भारत सरकार द्वारा 'नव भारत साक्षरता कार्यक्रम' योजना प्रारंभ की गई है जिसका लोकप्रिय नाम 'उल्लास' है – *समाज में सभी के लिए आजीवन सीखने की समझ* (ULLAS—Understanding of lifelong Learning for All in Society)। इस योजना का उद्देश्य है– 15 वर्ष और उससे अधिक आयु वाले वयस्कों को इस रूप में साक्षर करना कि वे एक सशक्त व्यक्तित्व बन सकें और समाज के विकास में अपना योगदान दे सकें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप 'नव भारत साक्षरता कार्यक्रम' में मुख्य रूप से पाँच घटक सम्मिलित हैं — (1) बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान, (2) महत्वपूर्ण जीवन कौशल, (3) बुनियादी शिक्षा, (4) व्यावसायिक कौशल, (5) सतत शिक्षा। असाक्षर शिक्षार्थियों को बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान सिखाने के लिए एक प्रवेशिका का निर्माण किया गया है, जिसका नाम है — *उल्लास — प्रवेशिका*। यह प्रवेशिका चार भागों में है। इस प्रवेशिका में भाषा और गणित दोनों विषय शामिल हैं। यह प्रवेशिका भाषा और गणित संबंधी सीखने के प्रतिफलों पर आधारित है। इस प्रवेशिका में विषय सामग्री के रूप में उन 13 विषयों को शामिल किया गया है, जो किसी भी वयस्क के जीवन से जुड़े हुए हैं। ये विषय हैं— परिवार, बातचीत, रहन-सहन, परिवेश स्वास्थ्य, मतदान, कानूनी जानकारी, आपदा प्रबंधन, समय, डिजिटल अंक, बैंक, कैलेंडर, पर्यावरण और साइबर सुरक्षा आदि। उदाहरण के लिए, पाठ 8 'मुसीबतें कैसी-कैसी' पाठ आपदा प्रबंधन पर आधारित है, जिसमें आग, बाढ़, भूकंप, रेल दुर्घटना आदि के बारे में चर्चा की गई है। *उल्लास प्रवेशिका* में भाषा की कुशलताएँ और गणितीय अवधारणाओं को एक साथ लिया गया है। उदाहरण के लिए, पाठ 3 में 'हमारा रहन-सहन' में एक बड़े आकार के चित्र के माध्यम से हिंदी भाषा के परिचित शब्दों की पहचान, शब्द पढ़ना और अक्षर-पहचान (ओ, औ, झ, द, ल, ग, क, य) तथा गणित में 21 से 50 तक की संख्याओं की पहचान करना, पढ़ना और लिखना; इकाई और दहाई समूहों में गिनना; 1 से 50 तक जोड़ और घटा करना सिखाने का प्रयास किया गया है। इसी प्रकार 'मतदान' पाठ क्ष, घ, ध, ढ, ढ़, अक्षरों एवं 12 और 24 घंटे वाली घड़ी देखना, कैलेंडर, समय-सारणी, डिजिटल अंक आदि पर

आधारित है। स्वयंसेवी शिक्षक स्वयं भी सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखते हुए अपने आस-पास उपलब्ध अन्य प्रकार की सामग्री का भी प्रयोग कर सकते हैं।

आशा है कि *उल्लास—प्रवेशिका* के चारों भाग पढ़ना-लिखना और गणित सीखने में असाक्षर शिक्षार्थियों के लिए सिद्ध सहायक होंगे। सामग्री के संवर्धन के लिए आप सभी के सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

उषा शर्मा
*प्रोफेसर* एवं *प्रभारी*
राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

# स्वयंसेवी शिक्षकों से दो बातें

बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान भारत सरकार की केंद्र प्रायोजित योजना 'उल्लास' का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसका उद्देश्य 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के उन शिक्षार्थियों को साक्षर बनाना है। 'उल्लास' के अंतर्गत पढ़ने-लिखने तथा संख्या-ज्ञान के कौशल को, उन शिक्षार्थियों तक लेकर जाना है, जो किसी कारण से स्कूली शिक्षा से नहीं जुड़ सके या उसे जारी नहीं रख सके। इसलिए संभव है कि सामाजिक चेतना केंद्र अथवा आपके संपर्क में आने वाले असाक्षर शिक्षार्थी पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया में अलग-अलग स्तर पर हों।

हमें यह ध्यान रखना होगा कि ये शिक्षार्थी समझदार हैं और इन्हें जीवन जीने का एक लंबा अनुभव है। वे अपने जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करते हैं और उन्हें अपने अनुकूल बना लेने की कुशलता भी रखते हैं। यह संभव है कि इनमें से अधिकांश लोग कामकाजी हों, जो घर में या बाहर किसी-न-किसी कामकाज में लगे हुए हैं या फिर कोई-न-कोई ज़िम्मेदारी उठा रहे हैं। हमारा उद्देश्य यह है कि साक्षरता/पढ़ना-लिखना और गणित की समझ उनके दैनिक जीवन को और अधिक सरल बनाए, जिसके माध्यम से वे अपने अनुभव और समझ (क्षमता) को और अधिक गहन एवं विस्तृत कर सकें। साथ ही वे इन क्षमताओं का प्रयोग जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में कर सकें। संभव है कि इससे उनके आत्मविश्वास में और वृद्धि होगी।

**स्वयंसेवी शिक्षक के रूप में हमारे लिए यह जानना आवश्यक है कि —**

- साक्षर बनने में हम, जिन शिक्षार्थियों की मदद करने जा रहे हैं वे 15 वर्ष अथवा उससे ऊपर की आयु के हैं। यह संभव है कि उनके पास हमसे भी अधिक अनुभवों का भंडार हो। उनके अनुभवों का सम्मान करना अपेक्षित है।
- वे अपने रोज़मर्रा के कार्य अपने ढंग से कर लेते हैं। उनकी कार्य कुशलता की सराहना करना अपेक्षित है।
- वे तभी पढ़ेंगे, जब उन्हें पढ़ना उपयोगी लगेगा। शिक्षार्थियों को पूरी तैयारी से पढ़ाएँ, ताकि वे जो पढ़ रहे हैं, उसका लाभ उन्हें मिल सके। इससे हम भी बहुत कुछ नया सीखेंगे व आपका भी आत्मविश्वास बढ़ेगा। अत: हम पूरी तैयारी, मेहनत और आदर के साथ शिक्षार्थियों को पढ़ाएँ।
- *उल्लास — प्रवेशिका* (चारों भाग) हिंदी भाषा और गणित का एकीकृत स्वरूप है। इसके प्रत्येक पाठ में हिंदी भाषा की क्षमताओं और गणितीय क्षमताओं के विकास के लिए पर्याप्त स्थान है।
- शिक्षार्थी हिंदी भाषा सुनने और बोलने में तो सक्षम हैं, लेकिन संभव है कि पढ़ने-लिखने के मौके न मिल पाने के कारण वे पढ़ने-लिखने में किसी प्रकार की कठिनाई महसूस करते हों। यह भी संभव है कि कुछ शिक्षार्थियों को थोड़ा-बहुत अक्षर ज्ञान हो। इसी प्रकार शिक्षार्थी के पास गणित का मौखिक प्रयोग करने की कुशलता और गणना करने के अनौपचारिक मौके तो हों, लेकिन अंकों की पहचान तथा विभिन्न प्रकार की गणितीय समस्याओं को हल करने में उन्हें कठिनाई होती हो।

- पाठों में समग्र चित्र, कहानी, कविता या किसी अन्य रोचक सामग्री के माध्यम से हिंदी भाषा के कुछ नए अक्षरों, शब्दों, पाठ्य-वस्तु को पढ़ना-लिखना सिखाया गया है। इसी पठन-सामग्री के संदर्भ में गणित के अंक, गणना व समस्याएँ हल करना सिखाया गया है। हम चाहें तो शिक्षण बिंदुओं को केंद्र में रखते हुए अतिरिक्त स्थानीय संसाधन सामग्री का प्रयोग कर सकते हैं। इससे हम शिक्षार्थियों के स्तर, उनकी क्षमता और आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए पठन-सामग्री जुटा सकते हैं।
- प्रवेशिका में दिए गए चित्रों का भरपूर प्रयोग करें। चित्र अनुमान लगाकर पढ़ना-लिखना सीखने में सहायक होंगे। चित्रों में एक वस्तु भी हो सकती है और एक पूरी प्रक्रिया या घटना भी, आवश्यकता के अनुसार चित्रों का प्रयोग किया जा सकता है। चित्र शिक्षार्थियों को बातचीत करने और अपने अनुभवों की साझेदारी करने के लिए आमंत्रित करते हैं।
- *उल्लास—प्रवेशिका* के पहले पृष्ठ पर विशेष रूप से शिक्षार्थियों के लिखने के लिए पर्याप्त जगह दी गई है, ताकि वे अपना नाम, पता और संपर्क सूत्र (फ़ोन नंबर) लिखें। शिक्षार्थियों के जीवन में ऐसे अवसर बार-बार आते हैं, जब उन्हें अपना नाम आदि लिखना होता है। यह कार्य उनके जीवन से बहुत नज़दीक से जुड़ा हुआ है। हो सकता है कि वे अपना नाम न लिख पा रहे हों तो ऐसे शिक्षार्थियों को उनका नाम, पता, फ़ोन नंबर आदि ज़रूरी सूचनाएँ लिखकर दिखाएँ और देखकर लिखने में उनकी मदद करें।
- *उल्लास—प्रवेशिका* के चारों भागों के अंत में हिंदी भाषा की वर्णमाला दी गई है। इसका उद्देश्य शिक्षार्थियों को हिंदी वर्णमाला के अक्षरों से परिचित कराना है, लेकिन प्रारंभ सार्थक सामग्री से ही होगा। एक बार अक्षरों से परिचित हो जाने के बाद वर्णमाला के माध्यम से शिक्षार्थियों से अक्षरों की पहचान करवाई जा सकती है। जो शिक्षार्थी पहले से ही थोड़ा-बहुत 'अक्षर-ज्ञान' की कुशलता रखते हैं, वे हिंदी वर्णमाला चार्ट वाले पृष्ठ का प्रयोग पहले भी कर सकते हैं।
- हिंदी वर्णमाला का चार्ट बार-बार देखने से शिक्षार्थियों की अक्षर-पहचान मज़बूत होगी। वे अनुमान लगाकर अक्षरों को पहचानने, पढ़ने और लिखने में इस कुशलता का प्रयोग कर सकते हैं।
- हिंदी भाषा के अक्षरों की पहचान के आस-पास भाषा-खेलों का आयोजन किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, हिंदी वर्णमाला में दिए किसी एक अक्षर से शुरू होने वाले शब्दों को बोलना, एक से अधिक अक्षरों का प्रयोग करते हुए शब्द बनाना और पढ़ना आदि। एक से अधिक अक्षर/मात्रा का प्रयोग करते हुए शब्दों को बोलना, पढ़ना-लिखना जैसे खेल भी सहायक हो सकते हैं।
- हिंदी वर्णमाला के अक्षरों का एक 'अक्षर-जाल' के रूप में प्रयोग करते हुए शब्द बनाने का काम भी खेल के रूप में करवाया जा सकता है। इस 'अक्षर-जाल' में सीखे हुए अक्षर/मात्राएँ ली जा सकती हैं।
- प्रवेशिका के अंत में दी गई हिंदी वर्णमाला को शिक्षार्थी पढ़ना-लिखना सीखने के दौरान कभी भी देख सकते हैं, पढ़ने-लिखने में उनका प्रयोग कर सकते हैं।

**शिक्षार्थियों को पढ़ाते समय ध्यान रखने योग्य बातें**

- **अपने शिक्षार्थी को जानें**— हम अपने शिक्षार्थी के बारे में जानें कि क्या, उन्हें बिल्कुल भी पढ़ना-लिखना नहीं आता या वे पहले से कुछ पढ़ना-लिखना जानते हैं या फिर उन्हें केवल अक्षरों की पहचान है या फिर वे केवल अपना नाम ही लिखना जानते हैं। यह भी हो सकता है कि वे संख्याओं का ज्ञान नहीं रखते या गणित के अंक और गणना के औपचारिक तरीके जानते हैं। उनके बारे में, उनकी पसंद-नापसंद, सुख-दुख, परिवार, चिंताएँ, संघर्ष को भी जानें ताकि जब हम सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को प्रारंभ करें तो उनके जीवन की घटनाओं को भी ध्यान में रखते हुए बातचीत कर सकें। बातों-बातों में उन्हें हौंसला मिल सके और वे सशक्त महसूस कर सकें। हमारी आत्मीयता उनके जीवन के अनेक दुखद पक्षों से उनका ध्यान हटा सकती है।
- **अपनी पढ़ने-पढ़ाने की गतिविधियों को मनोरंजक बनाएँ**— आपके आस-पास ऐसी अनेक चीज़ें होंगी, जो पाठ के शिक्षण के लिए उपयोगी हो सकती हैं। पाठ से जुड़ी ऐसी उपलब्ध चीज़ों; जैसे— कोई अखबार, पत्रिका, विज्ञापन, बिजली का बिल, रेलगाड़ी की टिकट आदि का समुचित प्रयोग करें।
- **शिक्षार्थी को अपनी बात कहने का अवसर दें**— स्वयं अधिक बोलने से बचें। शिक्षार्थी को चर्चा करने, अपने विचार अभिव्यक्त करने के पर्याप्त अवसर दें। हो सकता है, हमारी इच्छा बहुत कुछ जानकारी देने की हो, लेकिन हमें याद रखना है कि हमारे शिक्षार्थी पहले से ही बहुत कुछ जानते हैं, बल्कि हम स्वयं उनकी जानकारी और अनुभवों का लाभ उठा सकते हैं। इसके लिए हम उन्हें धन्यवाद देना न भूलें।
- **अतिरिक्त पठन-सामग्री का इस्तेमाल करें**— *उल्लास —प्रवेशिका* के प्रत्येक पाठ को पढ़कर उससे जुड़ी विभिन्न प्रकार की अर्थपूर्ण पठन-सामग्री इकट्ठा करें, जो रोचक हो और आस-पास आसानी से उपलब्ध हो। इससे पढ़ी जा रही पाठ्य-वस्तु को समझना सरल होगा, शिक्षार्थी उससे जुड़ सकेंगे।
- **शिक्षार्थी के प्रति संवेदनशील और सकारात्मक दृष्टिकोण रखें**— हम यह न समझें कि हम उम्र में छोटे हैं तो वे हमारी बातों को गंभीरता से नहीं लेंगे। वे आपको भरपूर आदर और प्यार देंगे, क्योंकि हम पढ़ना-लिखना और संख्या बोध सीखने में उनकी सहायता कर रहे हैं। आप बहुत ही समझदार, अनुभवी और संवेदनशील व्यक्ति हैं, फिर भी यह याद दिलाना ज़रूरी है कि उनके कामकाज, वेशभूषा, उच्चारण या फिर उठने-बैठने के तौर-तरीकों पर किसी तरह की नकारात्मक टिप्पणी न करें।
- **शिक्षार्थी की सहूलियत का ध्यान रखें**— पढ़ने-पढ़ाने का समय, स्थान, सीमा आदि का निर्धारण शिक्षार्थी के अनुकूल ही रखें। शिक्षार्थियों के लिए बैठने की सुविधा कुछ इस तरह से हो कि वे आराम से बैठ सकें और जब हम उन्हें अक्षर और शब्द पढ़कर दिखा रहे हों तो वे आसानी से देख भी सकें। दरी, मूढ़े इत्यादि का पहले से ही प्रबंध कर लें, जिससे अधिक उम्र वाले जिन शिक्षार्थियों के घुटने आदि में दर्द हो, उन्हें घंटा-दो घंटा बैठने में कोई असुविधा न हों।

- **बुनियादी ज़रूरतों का प्रबंध करना**— जिस स्थान पर हम शिक्षार्थियों को पढ़ा रहे हैं, वहाँ पीने के पानी का इंतज़ाम होना ज़रूरी होगा। वहाँ पर्याप्त प्रकाश भी होना चाहिए, ताकि आँखों पर ज़ोर न पड़े।
- **शिक्षार्थी के अनुभव और कुशलता का सम्मान करें**— हमारे शिक्षार्थी को अपने जीवन के बहुत से अनुभव हैं। पढ़ना-लिखना सीखने में इन अनुभवों का भरपूर लाभ उठाया जाए तो आपके लिए पढ़ना-लिखना सिखाना आसान हो जाएगा। हमारे शिक्षार्थी कामकाजी हैं। वे तरह-तरह के कौशल जानते होंगे। उनके कामकाज की शब्दावली और गणितीय कौशलों का पढ़ना-लिखना सिखाने में सही तरह से उपयोग किया जा सकता है। पढ़ने-लिखने के संदर्भ में आपकी समझ अधिक है, कामकाज व जीवन के अनुभवों की बात की जाए तो उनकी समझ गहरी है। आपसे अपेक्षा है कि आप उन्हें आदरपूर्वक संबोधित करेंगे। उनकी आयु व उनके अनुभवों को पूरा सम्मान देंगे।
- **शिक्षार्थी के सीखने की प्रक्रिया को समझें**— यह हो सकता है कि आपने जो आज सिखाया है, वे दो-तीन दिन बाद भूल जाएँ। यह बहुत ही स्वाभाविक-सी बात है। अत: पिछले सीखे हुए को दोहराना और अभ्यास करने के लिए प्रोत्साहित करना ज़रूरी होगा। हर शिक्षार्थी के सीखने की गति और तरीका अलग होगा, इस बात का विशेष ध्यान रखें और उन्हीं की गति और तरीके से सीखने में उनकी मदद करें। सीखने और बदलाव में समय लगता है इसलिए धैर्य बनाए रखें। केंद्र के माहौल को रोचक बनाने के लिए समय-समय पर मनोरंजक खेल, तीज-त्योहारों के अनुसार गीत आदि भी गाएँ। गीत, किस्से-कहानी, अनुभवों की साझेदारी से हम सीखने-सिखाने के बिंदुओं को जोड़ सकते हैं। इससे सीखने की प्रक्रिया को रोचक बनाया जा सकता है। सीखने के लिए एक प्रेरक और आनंददायी माहौल का होना अनिवार्य है।

बुनियादी और संख्या-ज्ञान को सीखने-सिखाने के संदर्भ में आपके सुझावों का स्वागत है।

असीम शुभकामनाएँ!

# निर्माण-समिति

**अध्यक्ष**

दिनेश प्रसाद सकलानी, *निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

**परामर्श**

अनूप कुमार राजपूत, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
रंजना अरोड़ा, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
संध्या सिंह, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
श्रीधर श्रीवास्तव, *संयुक्त निदेशक,* रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

**सदस्य**

अक्षय कुमार दीक्षित, *मेंटर शिक्षक*, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली
कामेश्वर राव, *प्रोफेसर सेवानिवृत्त*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल, मध्य प्रदेश
कृत प्रसाद, *प्रधानाचार्य*, मध्य विद्यालय, गौढ़ापुर, चंडी, नालंदा, बिहार
गुंजन खुराना, *वरिष्ठ परामर्शदाता*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
तृप्ति उपाध्याय, *परामर्शदाता*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
धर्मप्रकाश, *प्रोफेसर सेवानिवृत्त*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
निशात फ़ारूक, *पूर्व निदेशक*, राज्य संसाधन केंद्र, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली
प्रभात, *लेखक*, जयपुर, राजस्थान
महिमा बंसल, *कनिष्ठ परियोजना अध्येता*, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
मालविका राय, शिक्षा सलाहकार, नई दिल्ली
याचना गुप्ता, *वरिष्ठ परामर्शदाता*, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
यासमीन अशरफ़, *वरिष्ठ परामर्शदाता*, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
वर्षा सिंघल, *कनिष्ठ परियोजना अध्येता*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
शिवा श्रीवास्तव, *कनिष्ठ परामर्शदाता*, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
श्याम सुशील, *लेखक*, वसुंधरा एंक्लेव, नई दिल्ली
सत्यवीर सिंह, *प्रधानाचार्य*, राजकीय इंटर कॉलेज, बागपत, उत्तर प्रदेश
सोनाली, *कनिष्ठ परियोजना अध्येता*, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
सोनिका कौशिक, *असिस्टेंट प्रोफेसर, जीजस एंड मैरी कॉलेज*, नई दिल्ली

**समीक्षा**

आयुष्मान गोस्वामी, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर, राजस्थान

उषा शर्मा, *प्रोफेसर* एवं *प्रभारी*, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

कंचन देवरारी, *अपर निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प., देहरादून, उत्तराखंड

चाँदकिरण सलूजा, *निदेशक*, संस्कृत संवर्धन प्रतिष्ठान, नई दिल्ली

प्रशांत पांडेय, *सहायक निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प., रायपुर, छत्तीसगढ़

संजीव कुमार, *पूर्व प्रधानाचार्य*, *डाइट,* आर.के. पुरम, नई दिल्ली

सत्यवीर सिंह, *प्रधानाचार्य*, राजकीय इंटर कॉलेज, बागपत, उत्तर प्रदेश

**सदस्य समन्वयक**

उषा शर्मा, *प्रोफेसर* एवं *प्रभारी*, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

# आभार

परिषद्, उन सभी रचनाकारों के प्रति आभार व्यक्त करती है, जिनकी रचनाएँ प्रवेशिका में शामिल की गई हैं। रचनाओं के प्रकाशन हेतु अनुमति देने के लिए सुशील शुक्ल, *निदेशक*, एकतारा, भोपाल (*दीवाली के दीये*); सुभाष व्याम और दुर्गाबाई व्याम, *लोक चित्रकार*, भोपाल (*ददरिया लोकगीत*) और स्वर्गीय निरंकार देव सेवक (*ठीक समय पर*), श्याम सुशील (*आओ बादल*), प्रभात (*ज्ञानू ज्ञानी ज्ञान* और *क्षमा बुआ के पत्र*), निशात फ़ारूक (*मदद मिली तो कैसे और मेरा खाता मेरी शान*), स्वयं प्रकाश (*हाँजी नाजी*), प्रेमपाल शर्मा, (*सेवानिवृत्त*) *कार्यकारी निदेशक*, रेलवे बोर्ड (*गांधी जी की आत्मकथा से*) और आयुष्मान गोस्वामी, *अध्यक्ष*, शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर (*कहानियाँ*) का परिषद् आभार व्यक्त करती है।

इसके साथ ही पुस्तक में चित्रांकन के लिए परिषद् शशि शेट्ये, नई दिल्ली; सुनीता, *लोक चित्रकार* (मांडना शैली), जयपुर, राजस्थान; सुभाष व्याम, *लोक चित्रकार* (गोंड भित्ति शैली), भोपाल, मध्य प्रदेश; दुर्गाबाई व्याम, *लोक चित्रकार* (गोंड भित्ति शैली), भोपाल, मध्य प्रदेश; मानसिंह व्याम, *लोक चित्रकार* (गोंड भित्ति शैली), भोपाल, मध्य प्रदेश; प्रशांत सोनी, उदयपुर, राजस्थान; सागर अरणकल्ले, नोएडा, उत्तर प्रदेश; शुभम लखेरा, चंदेरी, मध्य प्रदेश; हबीब अली, ग्वालियर; मध्य प्रदेश; जितेंद्र चौरसिया, देवास, मध्य प्रदेश; हरिओम पाटीदार, धार, मध्य प्रदेश; नीलेश गहलोत, धार, मध्य प्रदेश; तापोशी घोषाल, नई दिल्ली; रुचिन सोनी, नई दिल्ली; मयूख घोष, कोलकाता, पश्चिम बंगाल; सच्चिदानंद साह, सहरसा, बिहार; राधाश्याम राउत, भुवनेश्वर, ओडिशा और श्रेयसी दत्त, मधुबनी, बिहार का विशेष आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, भारत निर्वाचन आयोग, राष्ट्रीय मतदाता सेवा पोर्टल, भारतीय कृषि अनुसंधान केंद्र, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, प्रधानमंत्री जन-धन योजना, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, राष्ट्रीय साक्षरता मिशन प्राधिकरण, राज्य संसाधन केंद्र, इंदौर के प्रति भी आभार प्रकट करती है, जिनकी वेबसाइट से प्रवेशिका के निर्माण के लिए उपयोगी सामग्री और चित्र प्राप्त हुए।

परिषद्, प्रवेशिका के विकास के विभिन्न चरणों में सहयोग के लिए राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र-प्रकोष्ठ की बाणी बोरा, *वरिष्ठ परामर्शदाता*; रोहित नैनवाल, *परामर्शदाता*; ज्योति तिवारी, *कनिष्ठ परियोजना अध्येता*; प्रियंका, अयाज़ अहमद अंसारी, योगेश प्रताप सिंह, *डी.टी.पी. ऑपरेटर*; मोहम्मद आतिर, तरुण कुमार नोगिया, *ग्राफ़िक डिज़ाइनर*, ईशवीन कौर बालूजा, *ग्राफ़िक आर्टिस्ट* और *एनीमेटर*, शुभम कुमार, *सीनियर ग्राफ़िक डिज़ाइनर* और जितेंद्र, *टाइपिस्ट* की आभारी है। परिषद्, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प. की सपना, *टाइपिस्ट* के प्रति आभारी है जिनके सहयोग से इस कार्य को पूरा करने में मदद मिली।

परिषद्, इस पुस्तक के संपादन कार्य के लिए प्रकाशन प्रभाग के मोहन शर्मा *सहायक संपादक* (संविदा), अंजू शर्मा *सहायक संपादक* (संविदा), शिव मोहन यादव, *सहायक संपादक* (संविदा) और अनुपमा भारद्वाज, *सहायक संपादक* (संविदा) और इस पुस्तक को वर्तमान स्वरूप प्रदान के लिए सुरेन्द्र कुमार, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ के *प्रभारी;* मोहन सिंह और सगीर अहमद, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* (संविदा) की भी आभारी है। इसके साथ ही परिषद् संपादन के लिए मीनाक्षी, *फ्रीलांसर* का भी आभार प्रकट करती है।

MANODARPAN
Empowering Minds, Enriching Lives
An Initiative of the Ministry of Education

## अगर आप ...


पढ़ाई एवं परीक्षा


निजी संबंधों


करियर


साथियों के दबाव

**को लेकर किसी भी तरह के तनाव, चिंता, परेशानी, उदासी या उलझन में हैं, तो काउंसलर की मदद लें**




**राष्ट्रीय टोल-फ्री काउंसलिंग टेली-हेल्पलाइन**
**सुबह 8 बजे से रात 8 बजे तक**
**सप्ताह के प्रत्येक दिन**

## मनोदर्पण

कोविड-19 के प्रकोप के दौरान और उसके बाद विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं कल्याण हेतु मनो-सामाजिक सहायता
(आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की एक पहल)

**www.https://manodarpan.education.gov.in**

# विषय-सूची

*आमुख* *iii*

*स्वयंसेवी शिक्षकों से दो बातें* *vii*

**1. परिवार और पड़ोस** **2–23**

- अ, आ, न, प, स, र, व
- अनवरी का परिवार
- 1 से 9 तक की संख्याएँ पहचानना, पढ़ना और लिखना
- आओ बादल

**2. बातचीत** **24–53**

- इ, ई, ब, त, म, ख, ट, च
- स्कूल को चिट्ठी
- 10 से 20 तक की संख्याएँ पहचानना, पढ़ना और लिखना
- 20 तक की संख्याओं का जोड़ और घटा करना
- अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा

**3. हमारा रहन-सहन** **54–86**

- ओ, औ, झ, द, ल, ग, क, य
- दीवाली के दीये
- 21 से 50 तक की संख्याएँ पहचानना, पढ़ना और लिखना
- इकाई और दहाई समूहों में गिनना
- 50 तक की संख्याओं का जोड़ और घटा करना
- कहानियाँ

# मेरी किताब

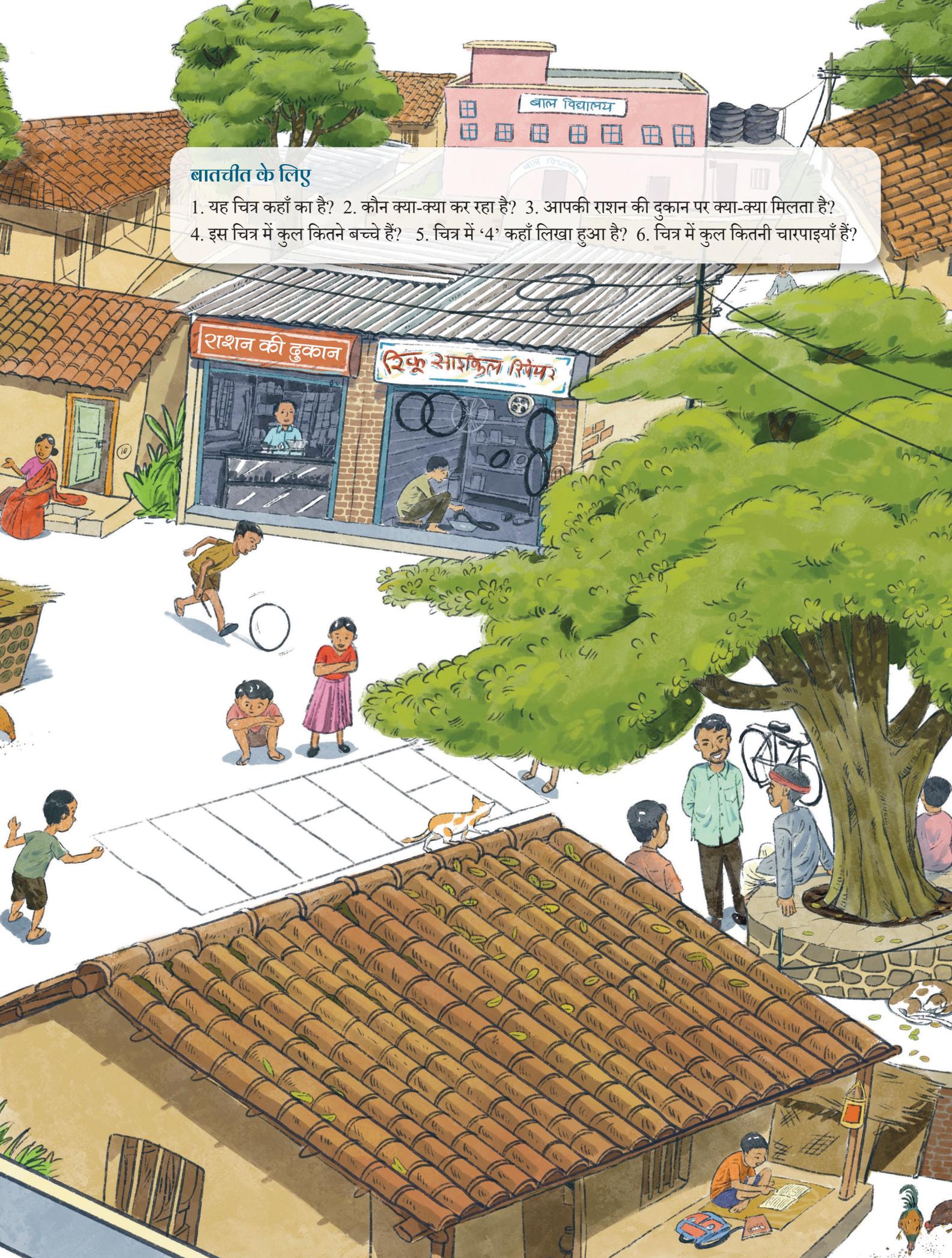
मेरा नाम _____

मेरा पता _____

_____

मेरा मोबाइल नंबर _____


शासकीय चिकित्सा केन्द्र
आरिफ फुटवियर
मुस्कान बुटिक
7
3
④




## बातचीत के लिए

1. यह चित्र कहाँ का है? 2. कौन क्या-क्या कर रहा है? 3. आपकी राशन की दुकान पर क्या-क्या मिलता है?
4. इस चित्र में कुल कितने बच्चे हैं? 5. चित्र में '4' कहाँ लिखा हुआ है? 6. चित्र में कुल कितनी चारपाइयाँ हैं?

# 1 परिवार और पड़ोस

## हम सीखेंगे

| अ | आ | न | प | स | र | व |
|---|---|---|---|---|---|---|

- 1 से 9 तक की संख्याएँ पहचानना, पढ़ना और लिखना

## चित्र से अनुमान लगाकर पढ़िए—




दुकान



परिवार



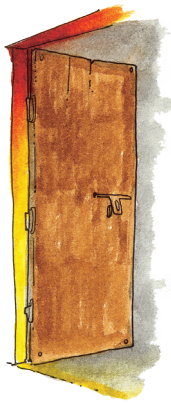
लोग



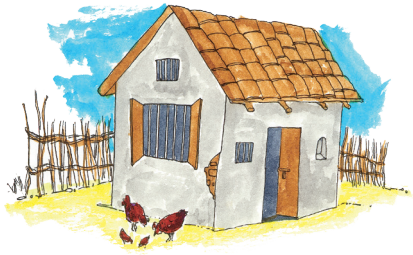
गली



रसोईघर



दरवाज़ा



घर



पड़ोसी

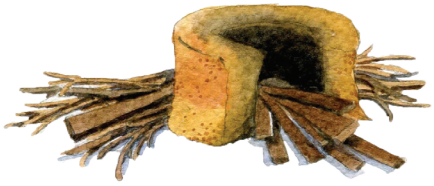


वकील

**शिक्षक-निर्देश** — सहभागियों से बारी-बारी सभी चित्रों की पहचान करवाएँ। चित्रों के नीचे उससे संबंधित शब्द दिए गए हैं, चित्र के आधार पर शब्दों को अनुमान लगाकर पढ़ने के लिए कहें। चित्र के नीचे लिखे शब्दों को अँगुली रखकर पढ़वाएँ।

## चित्र से अनुमान लगाकर पढ़िए—

आपके घर में इनमें से क्या-क्या है? सही का निशान (✓) लगाइए—



मिट्टी का चूल्हा

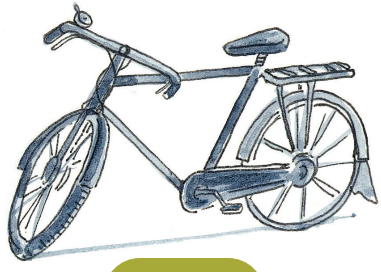


चारपाई

सितंबर

| रवि | सोम | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | 1 | 2 | 3 |
| 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
| 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 |
| 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 |
| 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 |

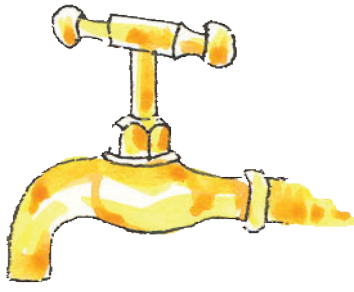
कैलेंडर



साइकिल



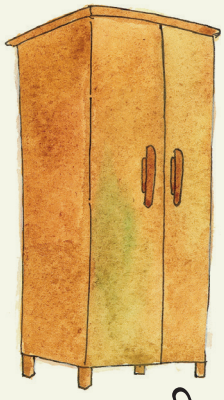
सिलेंडर



नल

## पढ़िए और लिखिए—

अ



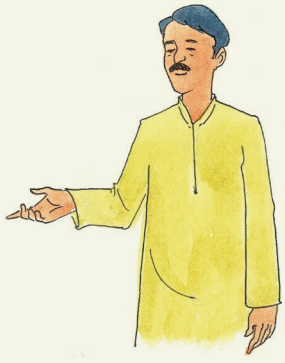
अलमारी



अनार

अ अ

आ



आदमी



आम

आ आ

**शिक्षक-निर्देश**— सहभागियों से बारी-बारी चित्र की पहचान करवाएँ। चित्र के नीचे लिखे शब्दों को अँगुली रखकर पढ़वाएँ और सहभागियों से अक्षर लिखवाएँ। 'अ' और 'आ' की आवाज़ और आकृति के अंतर को भी समझाएँ। इसी तरह बाकी अक्षरों को पढ़वाने और लिखवाने का काम करें।

# न



नदी



नल

न न

# ना



नारियल



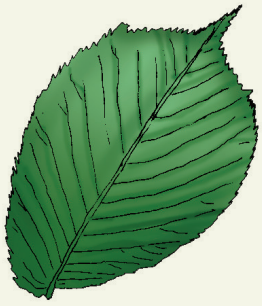
नाखून

ना ना

# प



पपीता



पत्ता

प प

# पा



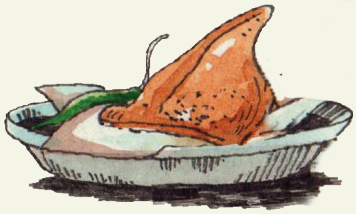
पालक



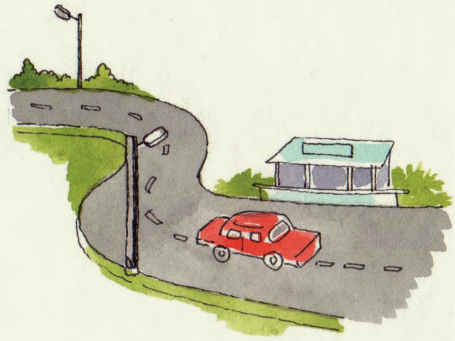
पायल

पा पा

स



समोसा



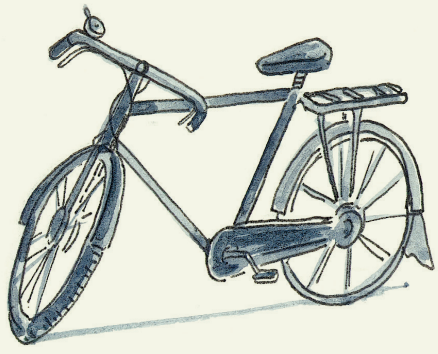
सड़क

स स

सा

7

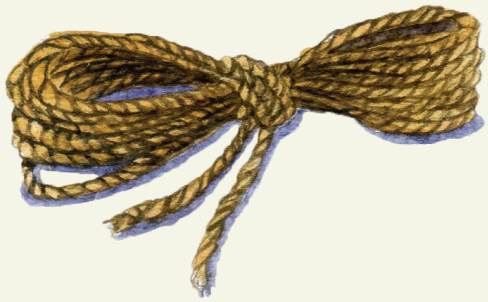
सात



साइकिल

सा सा

र





रस्सी

रसगुल्ला

रा





राखी

रानी

व



वन



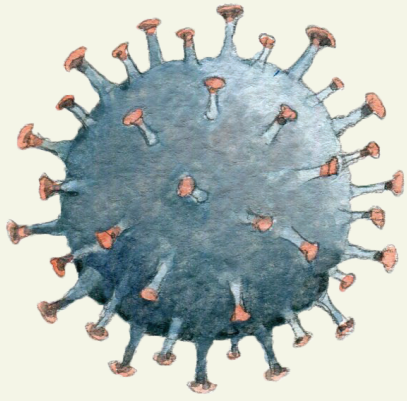
वकील

व व

वा



वाद्ययंत्र



वायरस

वा वा

## मेरे शब्द—

**शिक्षक-निर्देश**— 'परिवार और पड़ोस' विषय पर बातचीत करें। सहभागियों से आस-पास के लोगों की संस्कृति एवं सामाजिक संबंधों के बारे में चर्चा करें। सहभागियों से पूछकर इस विषय से जुड़े 3–4 शब्द लिखें। ये शब्द उनकी अपनी भाषा के भी हो सकते हैं, जैसे– रसोईघर के लिए 'चौका', नमक के लिए 'नून/लूण/लौण' आदि।

# अनवरी का परिवार



**धान लगाई है**
**अबकी खेत में हमने**
**अपनी जान लगाई है।**

*– सुशील शुक्ल*

## आप क्या सोचते हैं?

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रश्न 1. | क्या इस चित्र में गुड़ाई का काम चल रहा है? | हाँ ◯ | नहीं ✓ |
| प्रश्न 2. | क्या आपके इलाके में धान की खेती होती है? | हाँ ◯ | नहीं ◯ |
| प्रश्न 3. | क्या आपका परिवार भी मिलकर कोई काम-धंधा करता है? | हाँ ◯ | नहीं ◯ |
| प्रश्न 4. | क्या आप उस काम में अपने परिवार की मदद करते हैं? | हाँ ◯ | नहीं ◯ |

**शिक्षक-निर्देश** — इन प्रश्नों के आधार पर सहभागियों के कामकाज और उनके परिवार के बारे में चर्चा करें। ऊपर दिए गए सवालों के नीचे अँगुली रखकर पढ़ें और सहभागियों से हाँ/नहीं पर (✓) का निशान लगाने के लिए कहें।

## देखिए, पढ़िए और लिखिए—

**अ** से शुरू होने वाला शब्द पहचानकर लिखिए—

अनार रस पास पान

**आ** से शुरू होने वाला शब्द पहचानकर लिखिए—

पारस आरा नस नर

**व** से शुरू होने वाला शब्द पहचानकर लिखिए—

पासा सर नाव वर

**वा** से शुरू होने वाला शब्द पहचानकर लिखिए—

सारा रवाना रवा वापस

**न** से शुरू होने वाला शब्द पहचानकर लिखिए—

वार नस नारा नापा

**ना** से शुरू होने वाला शब्द पहचानकर लिखिए—

आना नाव आर-पार नस

**र** से शुरू होने वाला शब्द पहचानकर लिखिए—

पार पास पान रस

**स** से शुरू होने वाला शब्द पहचानकर लिखिए—

वानर सावन सड़क पावन

**प** से शुरू होने वाला शब्द पहचानकर लिखिए—

नाव वर पपीता पावन

**शिक्षक-निर्देश**— सहभागियों को शब्दों को पढ़ने और लिखने का मौका दें और शब्द लिखने में उनकी मदद करें। दिए गए अक्षरों से शुरू होने वाले शब्दों की पहचान कराएँ और लिखने का अभ्यास भी कराएँ।

## गिनिए और संख्या पहचानिए—



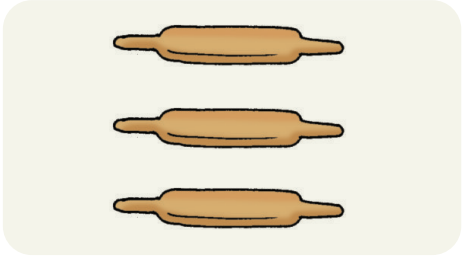
1

**एक** नाव



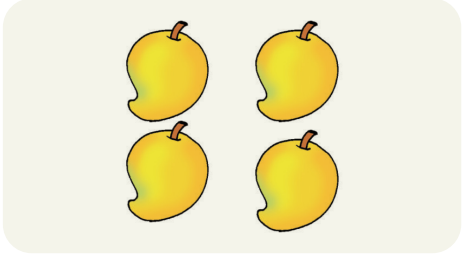
2

**दो** पायल



3

**तीन** बेलन



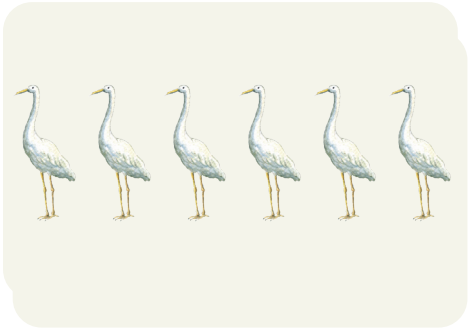
4

**चार** आम



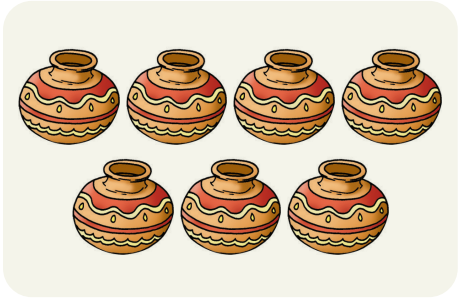
5

**पाँच** घर



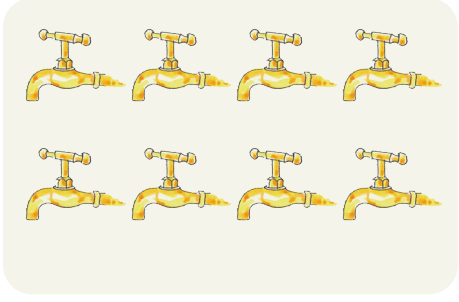
6

**छह** सारस



7

**सात** मटके



8

**आठ** नल



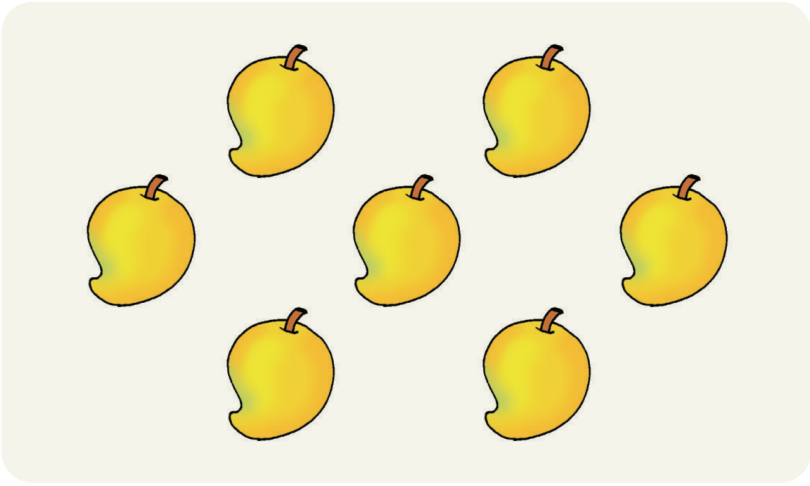
9

**नौ** अनार

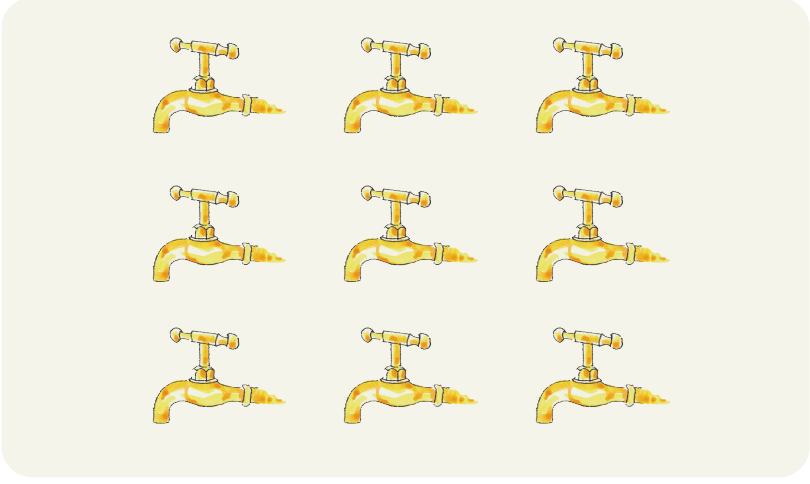
**शिक्षक-निर्देश** — यह कोशिश करें कि सहभागी चित्रों में दिखाई गई चीज़ों को गिनें एवं दिखाई गई संख्या को पहचानें। सहभागियों को अपने आस-पास मौजूद चीज़ों को भी गिनने का अवसर दें, जैसे– कमरे में कितने व्यक्ति हैं?

## घेरा बनाकर दी गई संख्या जितना समूह बनाइए—

4 **चार** आम



7 **सात** नल



**शिक्षक-निर्देश**— सहभागियों को प्रोत्साहित करें कि वे संख्या को पहचान कर बोलें और उतनी वस्तुएँ गिनकर उन पर घेरा लगाएँ।

## ■ वस्तुओं के समूह को संख्या से मिलाइए—

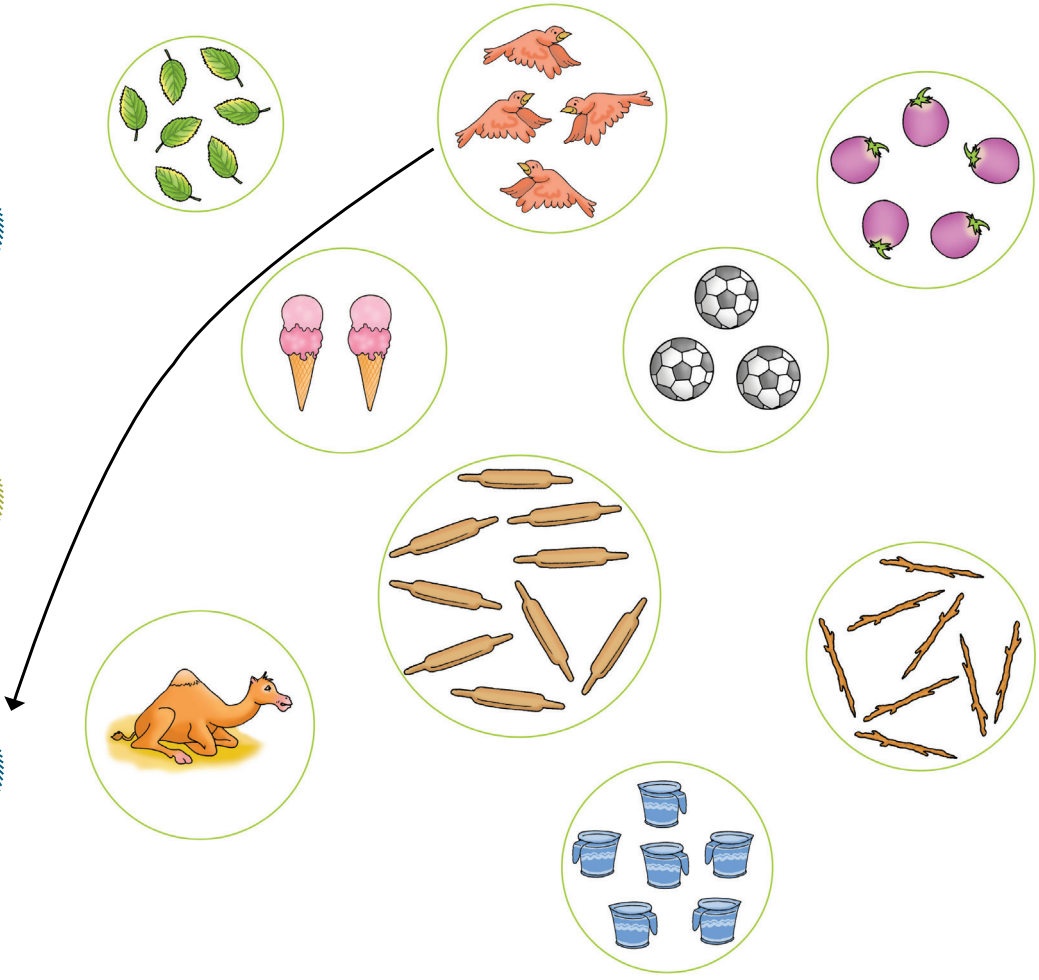
1 एक

2 दो

3 तीन

4 चार

5 पाँच



6 छह

7 सात

8 आठ

9 नौ

**शिक्षक-निर्देश**— यह कोशिश करें कि सहभागी प्रत्येक समूह में दिखाई गई वस्तुओं को गिनकर लिखी गई संख्या से मिलान करें।

## मोबाइल फ़ोन में कौन-सा अंक कहाँ है?




## अपना या किसी परिचित का मोबाइल नंबर लिखिए—

_____

## इस नंबर में कौन-सा अंक एक से ज़्यादा बार दबाएँगे?

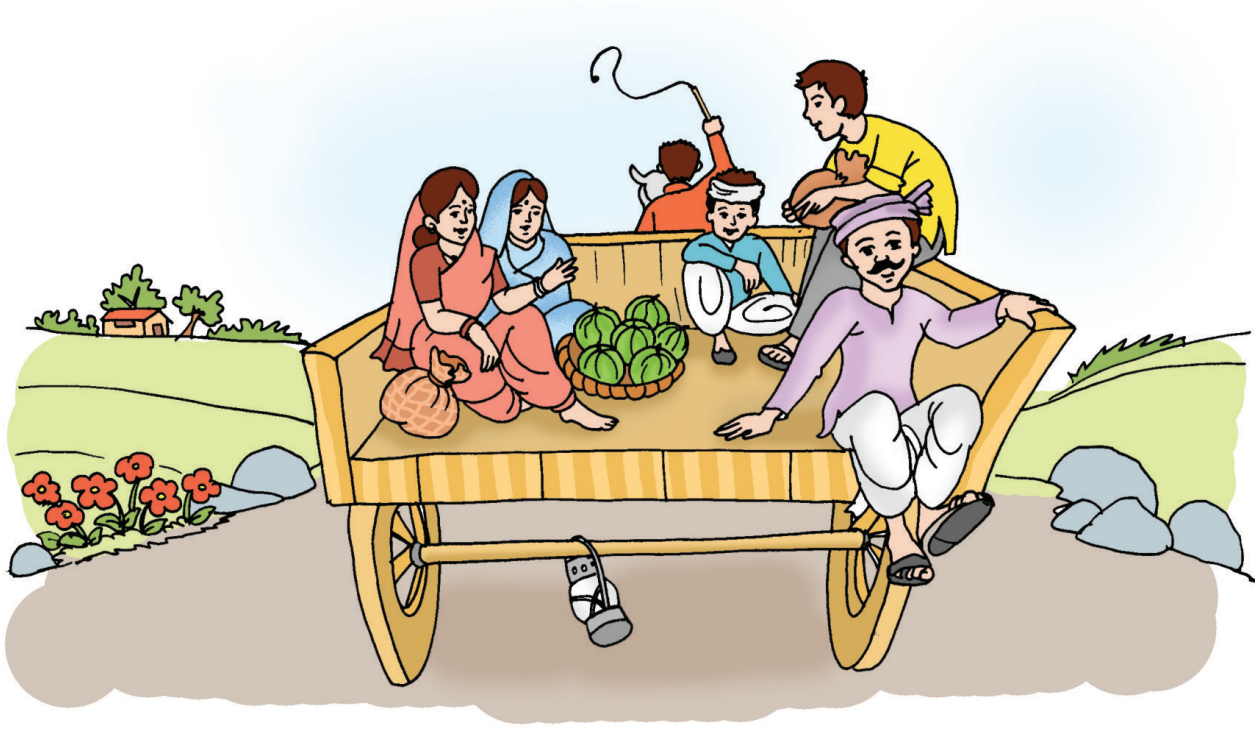
_____

## गिनती बोलिए और लिखिए—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 1 | | 6 | 6 | |
| 2 | 2 | | 7 | 7 | |
| 3 | 3 | | 8 | 8 | |
| 4 | 4 | | 9 | 9 | |
| 5 | 5 | | | | |

**शिक्षक-निर्देश**— मोबाइल फ़ोन में दिए गए अंकों को लिखने का अभ्यास करवाएँ। यह कोशिश करें कि सहभागी इन अंकों को पहले बिंदुयुक्त रेखा की मदद से और फिर स्वयं से बोलें और लिखें। जिन सहभागियों को अधिक अभ्यास की ज़रूरत हो, उन्हें बार-बार अभ्यास का अवसर दें। यह कोशिश करें कि सहभागी मोबाइल के की-पैड पर लिखी हुई संख्याओं का पैटर्न पहचानें और उसके आधार पर संख्याओं (1 से 9 तक) को लिखें।

## राजा का परिवार बैलगाड़ी से जा रहा है। देखिए, गिनिए और लिखिए—



- गाड़ी में कुल कितने व्यक्ति हैं? ☐
- गाड़ी में कितने पुरुष हैं? ☐
- गाड़ी में कितनी महिलाएँ हैं? ☐
- टोकरी में कितने तरबूज़ हैं? ☐
- गाड़ी में कितने पहिये हैं? ☐
- गाड़ी में कितनी लालटेन हैं? ☐

**शिक्षक-निर्देश** — सहभागियों से वस्तुओं को गिनकर सही संख्या लिखने का अभ्यास करवाएँ। संख्या पढ़ने और लिखने में सहभागियों की मदद करें। आप चाहें तो आस-पास मौजूद चीज़ों की गिनती भी करवा सकते हैं।

कविता मिलकर पढ़िए—

# आओ बादल

आ से आओ
बा से बादल
पा से पानी
लाओ बादल।

ध से धरती
त से तपती
न से नहर
नदी भी सूखी।

उ से उमड़ो
छा से छाओ
ज से जल्दी
आओ बादल।

प से पेड़
परिंदे गुमसुम
ह से हरियाली
है रूठी।

झ से झम-झम
ब से बरसो
ग से गरजो
गाओ बादल।

*– श्याम सुशील*



## ■ कविता में से नीचे दिए अक्षरों से शुरू होने वाले शब्दों को पहचान कर लिखिए—

आ.....  प.....

न.....  पा.....

## ■ चित्र देखकर खाली स्थान भरिए—

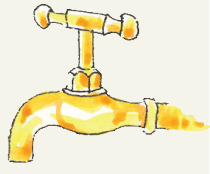
1. सा.....स 

2. वान..... 

3. अ.....र 

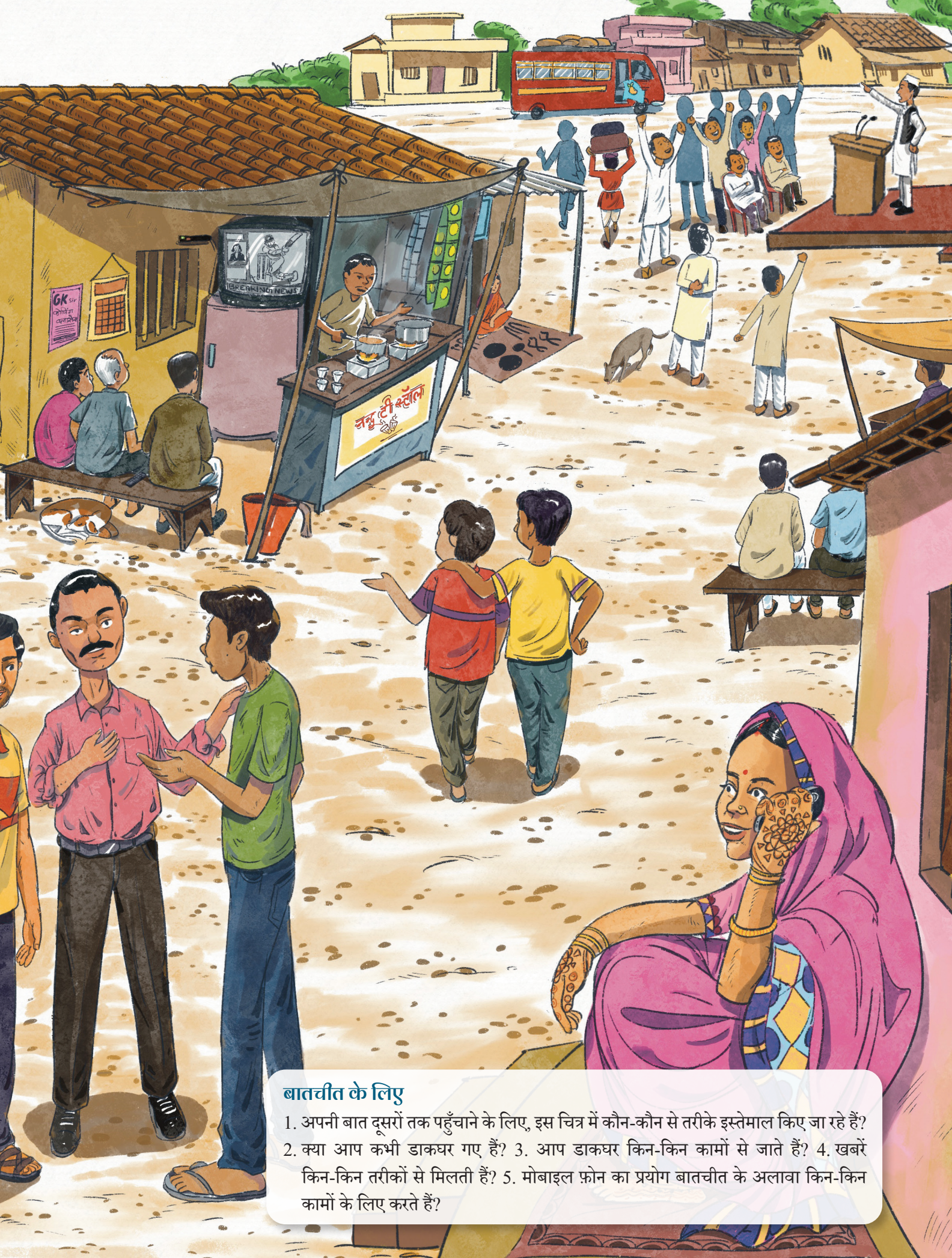
4. व..... 

5. .....म 

6. .....ल 

**शिक्षक-निर्देश**— सहभागियों के साथ मिलकर कविता में अक्षरों और शब्दों की पहचान कराएँ। अक्षर और शब्दों को लिखने में सहभागियों की मदद करें। कविता को गाकर पढ़ने के लिए प्रेरित करें।


डाक घर
जनपद मुशायरी
पत्र




## बातचीत के लिए

1. अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने के लिए, इस चित्र में कौन-कौन से तरीके इस्तेमाल किए जा रहे हैं?
2. क्या आप कभी डाकघर गए हैं? 3. आप डाकघर किन-किन कामों से जाते हैं? 4. खबरें किन-किन तरीकों से मिलती हैं? 5. मोबाइल फ़ोन का प्रयोग बातचीत के अलावा किन-किन कामों के लिए करते हैं?

# 2 बातचीत

## हम सीखेंगे

| इ | ई | ब | त | म | ख | ट | च |
|---|---|---|---|---|---|---|---|

- 10 से 20 तक की संख्याएँ पहचानना, पढ़ना और लिखना
- 20 तक की संख्याओं का जोड़ और घटा करना

## चित्र से अनुमान लगाकर पढ़िए—




अखबार



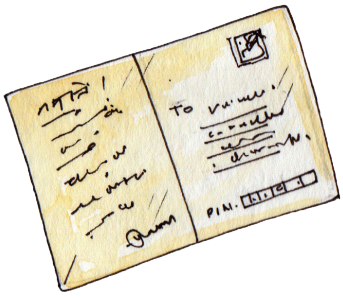
माइक



बातचीत



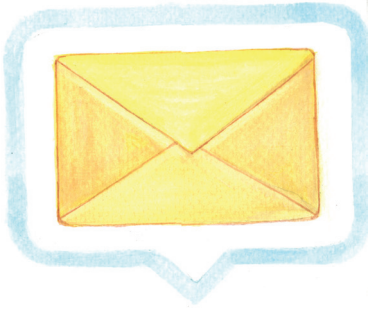
मोबाइल फ़ोन



चिट्ठी



टेलीविज़न



एस.एम.एस.



टेलीफ़ोन



डाक-पेटी

**शिक्षक-निर्देश**— सहभागियों से सभी चित्रों की पहचान करवाएँ। चित्रों के नीचे, उनसे संबंधित शब्द दिए गए हैं। चित्र के आधार पर शब्दों को अनुमान लगाकर पढ़वाएँ।

## चित्र से अनुमान लगाकर पढ़िए—

आपके घर और आपके आस-पास, इनमें से किनका इस्तेमाल होता है? सही का निशान (✓) लगाइए—





रेडियो

टेलीविज़न



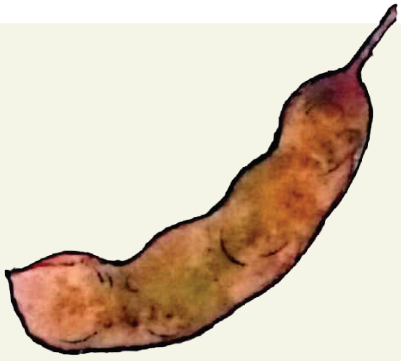


डाक-पेटी

पेन

## पढ़िए और लिखिए—

इ



इमली



इकतारा

ई



ईख



ई-मेल

# ब



बस



बच्चे

# बा

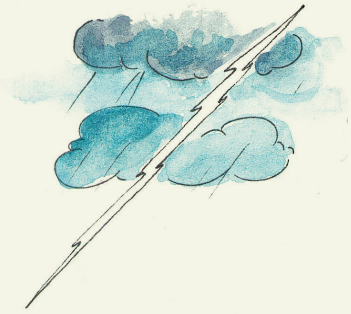


बादल



बाल

# बि



बिजली

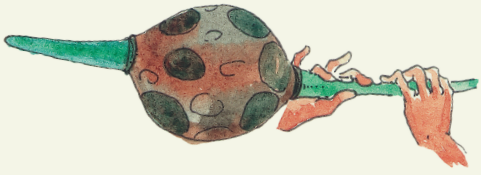


बिल्ली

# बी



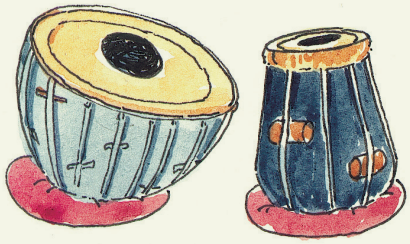
बीज



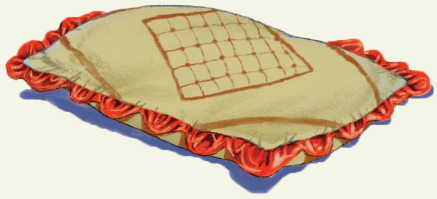
बीन

**शिक्षक-निर्देश**— चित्र देखकर शब्द पढ़ने में सहभागियों की मदद करें, उनसे अक्षर लिखवाएँ। दी गई जगह में चित्र का नाम लिखवाएँ।

त



तबला

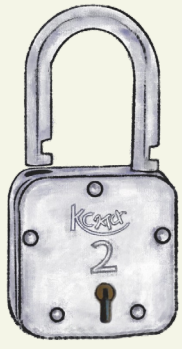


तकिया

ता



तारा



ताला

ति

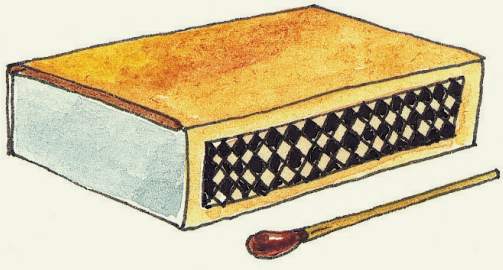


तितली



तिजोरी

ती

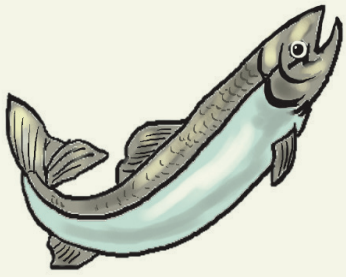


तीली

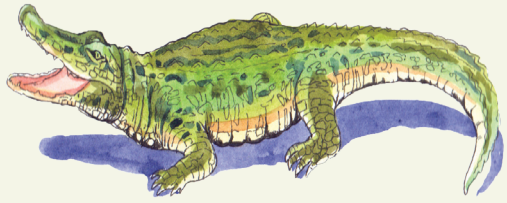


तीर

म



मछली

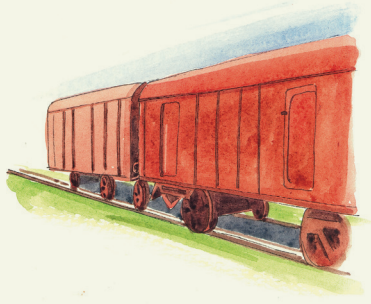


मगर

मा

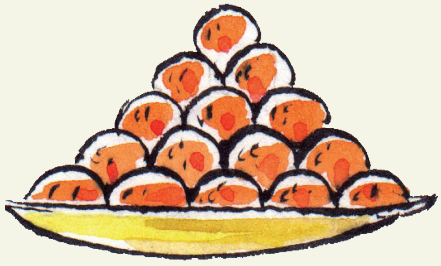


मालिश



मालगाड़ी

# मि



मिठाई



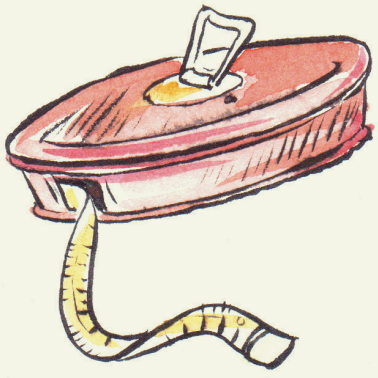
मिल

मि

# मी




मील का पत्थर



मीटर टेप

मी

# ख

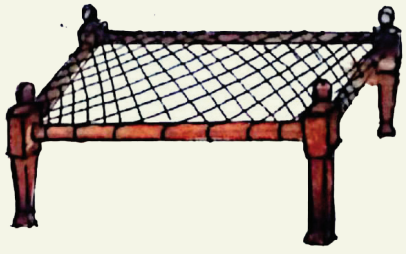


खपरैल




खतरा

# खा



खाट



खाता

# ख



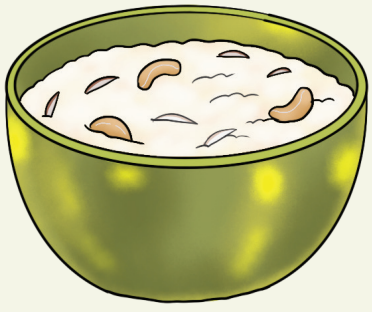
खिलौने



खिलाड़ी

ख

# खी



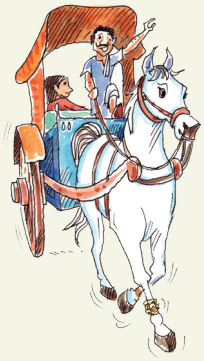
खीर



खील

खी

# ट



टमटम



टनटन

# टा

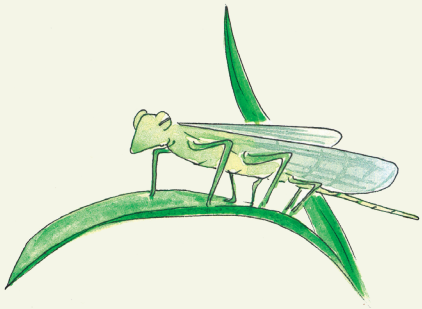


टाटा

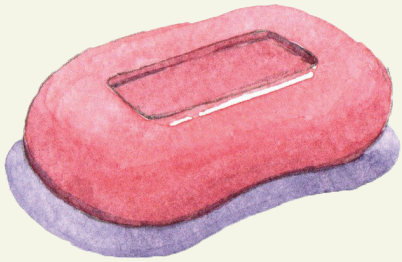


टाई

टि



टिड्डा



टिकिया

टी

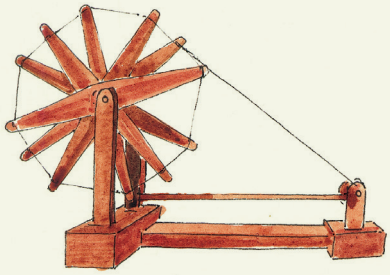


टीला



टीका

# च

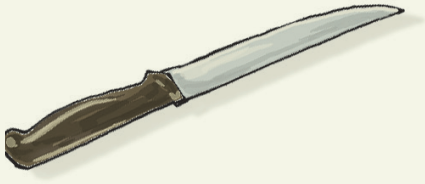


चरखा

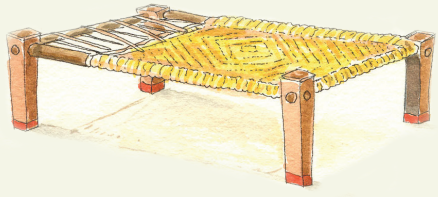


चम्मच

# चा



चाकू

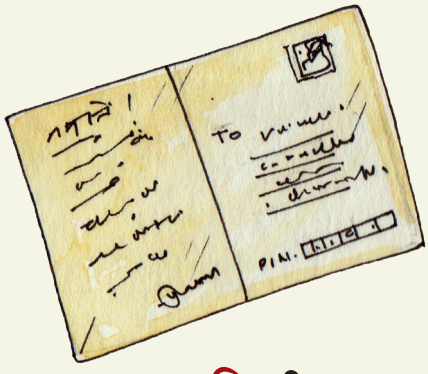


चारपाई

# चि



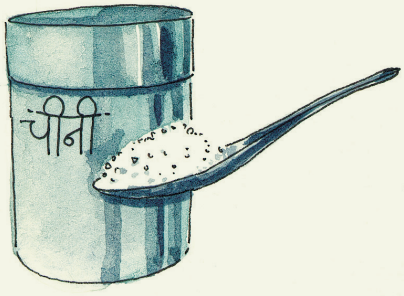
चिड़िया



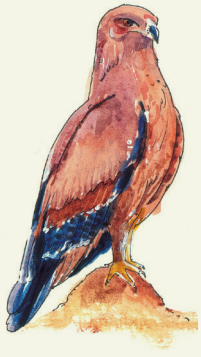
चिट्ठी

चि

# ची




चीनी



चील

ची

# स्कूल को चिट्ठी

04.02.2023

मैडम जी

नमस्कार,

हमारी लड़की बबली, आपके स्कूल में कक्षा नौ में पढ़ती है। हम दो महीने के लिए गाँव चले गए थे। हम अब गाँव से वापस आ गए हैं, लेकिन बबली का नाम स्कूल से कट गया है। कृपया बबली को फिर से स्कूल में दाखिला दे दीजिए।

धन्यवाद!

आरती

बबली की माँ




**शिक्षक-निर्देश** — ऊपर दी गई चिट्ठी सहभागियों को पढ़कर सुनाएँ। उनसे इस पर बातचीत करें कि कभी उन्हें पत्र लिखने की ज़रूरत पड़ी है। आगे दिए गए सवालों के नीचे अँगुली रखकर पढ़ें और सहभागियों से हाँ/नहीं पर (✓) का निशान लगाने के लिए कहें।

## ■ पढ़िए और बताइए—

प्रश्न 1. क्या आपको कभी चिट्ठी लिखने की ज़रूरत पड़ी है? हाँ ☐ नहीं ☐

प्रश्न 2. क्या आपके घर के आस-पास कोई डाक-पेटी या डाकघर है? हाँ ☐ नहीं ☐

प्रश्न 3. क्या आप कभी डाकघर गए हैं? हाँ ☐ नहीं ☐

प्रश्न 4. क्या डाकघर में आपका बचत खाता है? हाँ ☐ नहीं ☐

## ■ देखिए, पढ़िए और लिखिए—

**इ** से शुरू होने वाला शब्द पहचान कर लिखिए—

चटनी इमरती चटख तीस

**ई** से शुरू होने वाला शब्द पहचान कर लिखिए—

बाट टीन ईख नई

**खा** से शुरू होने वाला शब्द पहचान कर लिखिए—

खटाई खपत खाट पाचन

**टा** से शुरू होने वाला शब्द पहचान कर लिखिए—

चिमटा नटखट आटा टालना

**मी** से शुरू होने वाला शब्द पहचान कर लिखिए—

मामी तीखा मीठा तीखा

**बि** से शुरू होने वाला शब्द पहचान कर लिखिए—

बचत बिल बीच चटखनी

**खि** से शुरू होने वाला शब्द पहचानकर लिखिए—

खीर सरपट खिलाड़ी खतरा

**ची** से शुरू होने वाला शब्द पहचानकर लिखिए—

चील चाची चना बरनी

**मा** से शुरू होने वाला शब्द पहचानकर लिखिए—

चमक माता बीमा चिमनी

**पी** से शुरू होने वाला शब्द पहचानकर लिखिए—

पीपनी पपीता पिता पाइप

## मेरे शब्द—

**शिक्षक-निर्देश**— शब्द पढ़ने में सहभागियों की मदद करें। अलग-अलग आवाज़ों वाले शब्द लिखने के लिए कहें। ये आवाज़ें शब्द के शुरू में, बीच में या अंत में हो सकती हैं। सहभागियों से अक्षर पहचानने व उनसे जुड़े शब्दों को पहचान कर लिखने के लिए प्रेरित करें।

## आइए, गिनती पहचानें—







इस नोट में 5 कितनी बार छपा है, निशान लगाइए और लिखिए—







इस नोट में 10 कितनी बार छपा है, निशान लगाइए और लिखिए—

## आइए, मिलकर गिनें—

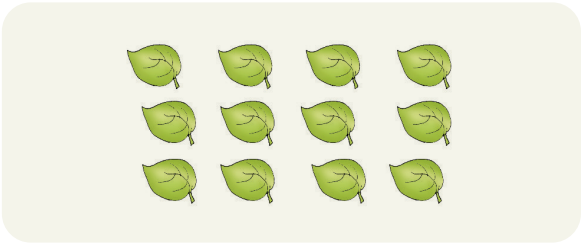


**दस** नल 10

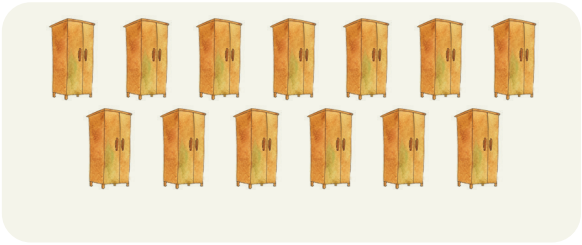


**ग्यारह** पलंग 11

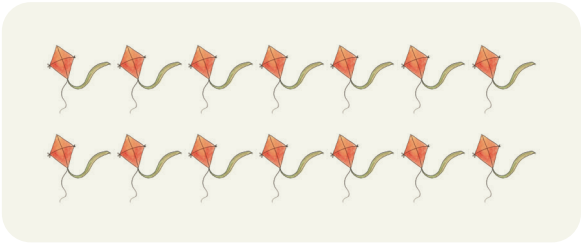
**शिक्षक-निर्देश**— सहभागियों को प्रोत्साहित करें कि वे नोटों के आगे-पीछे वाले हिस्से पर लिखे अंकों को पहचानें और चित्र में दी गई वस्तुओं की संख्या को गिनें। चाहें तो आस-पास मौजूद चीज़ें भी गिन कर लिख सकते हैं।



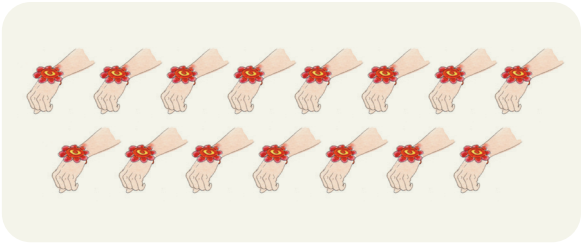
**बारह** पत्ते 12



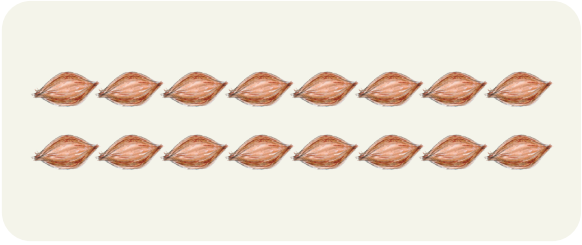
**तेरह** अलमारी 13



**चौदह** पतंग 14



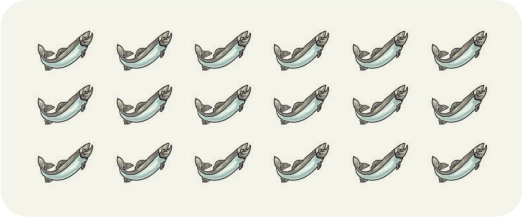
**पंद्रह** राखी 15



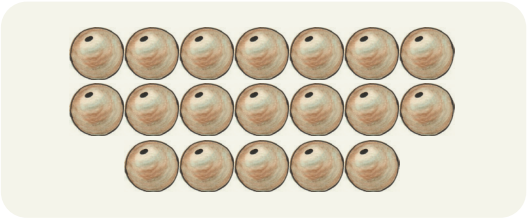
**सोलह** नारियल 16



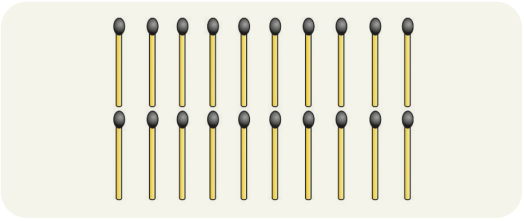
**सत्रह** अनार 17



**अठारह** मछली 18



**उन्नीस** मोती 19



**बीस** तीली 20

- **महिमा के परिवार में पाँच लोग हैं। आज उसके घर चार लोग और आ गए हैं। बताइए, महिमा के घर में अब कुल कितने लोग हैं?**

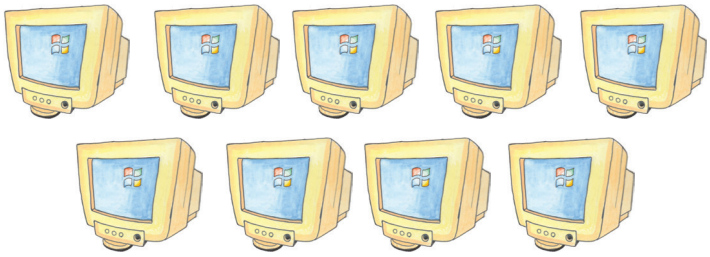
 और  मिलाकर हुए 

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | लोग | और | 4 | लोग | मिलाकर | हुए | 9 | लोग |
| 5 | | + | 4 | | मिलाकर हुए | | 9 | |
| 5 | | + | 4 | | = | | 9 | |

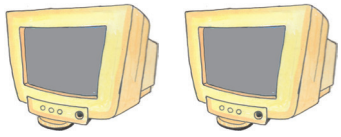
**5 + 4 = 9**

**शिक्षक-निर्देश** — सहभागियों को चित्रों की मदद से गिनने का अवसर दें, ताकि वे 10 से 20 तक के अंकों को पहचान सकें। गणित में '+' यह जमा का निशान है, '–' यह घटा का निशान है और '=' यह बराबर का निशान है।

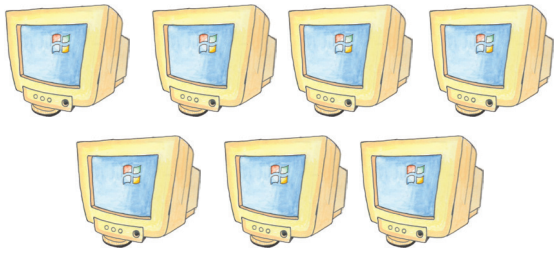
## ■ नौ कंप्यूटर में से दो कंप्यूटर खराब हो गए। बताइए, कितने कंप्यूटर चालू हालत में हैं?



कंप्यूटर में से



कंप्यूटर खराब हुए

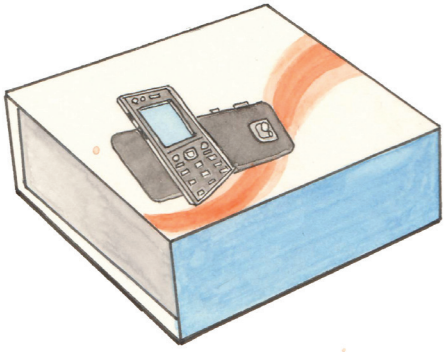


चालू हालत में बचे कंप्यूटर

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 9 | कंप्यूटर में से | 2 | कंप्यूटर खराब हुए | 7 | कंप्यूटर चालू हालत में बचे |
| 9 | – | 2 | बचे = | 7 | |
| 9 | – | 2 | = | 7 | |

**9 – 2 = 7**

**शिक्षक-निर्देश**— दैनिक जीवन में ऐसे अवसर आते हैं, जहाँ दो संख्याओं का जोड़ करना होता है। सहभागियों को प्रोत्साहित करें कि वे अलग-अलग संख्याओं को जोड़कर ऐसा कर पाएँ। छोटी (9 तक की) संख्याओं का प्रयोग कर घटा भी कर पाएँ।



- एक दुकानदार के पास एक कंपनी ने मोबाइल के 18 डिब्बे भेजे। दुकानदार ने उनमें से 6 डिब्बे दूसरे दुकानदार को भेज दिए। अब दुकानदार के पास कितने डिब्बे बचे हैं?

  उत्तर _____



- डाकिए ने पहले दिन 8 चिट्ठियाँ बाँटीं। दूसरे दिन उसने 3 चिट्ठियाँ बाँटीं। डाकिए ने कुल कितनी चिट्ठियाँ बाँटीं?

  उत्तर _____

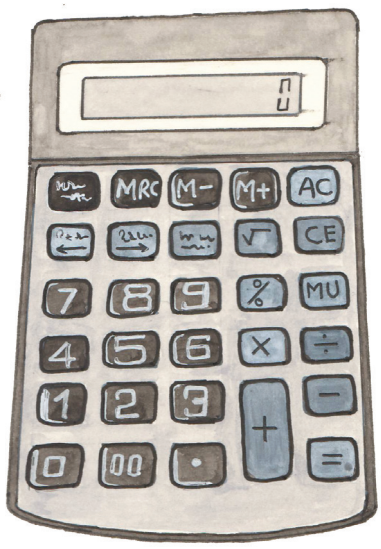
- डाकिए के पास कुल 15 चिट्ठियाँ हैं। शाम तक उसने सभी चिट्ठियाँ बाँट दीं। अब डाकिए के पास कितनी चिट्ठियाँ बची हैं?

  उत्तर _____

- जावेद के पास 20 रुपये हैं। उसने 15 रुपये के फल खरीदे। अब वह कितने रुपये और खर्च करे कि उसके पास एक भी रुपया शेष ना बचे?

  उत्तर _____

## ■ कैलकुलेटर पर लिखे अंकों को देखें। ऐसी दो संख्याओं को लिखें, जिनका जोड़ 10 आएगा। इसे कैलकुलेटर में करके जाँचिए।




जैसे—

पहले 1 बटन + फिर 9 बटन 10

पहले ___ बटन + फिर ___ बटन 10

पहले ___ बटन + फिर ___ बटन 10

पहले ___ बटन + फिर ___ बटन 10

## ■ मेरे शब्द—

**शिक्षक-निर्देश**— 'बातचीत' विषय पर सहभागियों से बातचीत कीजिए। सहभागियों से पूछकर इस विषय से जुड़े 3–4 शब्द लिखिए। ये शब्द उनकी अपनी भाषा के भी हो सकते हैं, जैसे— 'लाउडस्पीकर' के लिए 'चुंगा' आदि। मोबाइल फ़ोन, टेलीफ़ोन, पत्र आदि बातचीत के मुख्य साधन हैं, इस पर चर्चा करें।

## मिलकर पढ़िए—

यह 'अंधेर नगरी' नाटक का एक अंश है। यह नाटक भारतेंदु हरिश्चंद्र ने बहुत समय पहले लिखा था। उस समय चीज़ों का वज़न किलोग्राम या ग्राम में तोलने की बजाय सेर, पाव और छटाँक में तोला जाता था। उसी तरह खरीदने-बेचने के लिए भी पैसे की जगह टके का इस्तेमाल होता था।

### अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा



**दुकानदार** — आटा, दाल, नमक, घी, चीनी, मसाला और चावल लो, टके सेर।

*(गोबर्धनदास बाज़ार में है। परचून की दुकान पर जाकर चीज़ों के दाम पूछता है।)*

**गोबर्धनदास** — क्यों भाई, आटा कितने सेर?

**दुकानदार** — टके सेर।

**गोबर्धनदास** — और चावल?

**दुकानदार** — टके सेर।



**गोबर्धनदास** — और चीनी?

**दुकानदार** — टके सेर।

**गोबर्धनदास** — और घी?

**दुकानदार** — टके सेर।

**गोबर्धनदास** — सब टके सेर। सचमुच!

**दुकानदार** — हाँ महाराज, क्या झूठ बोलूँगा!

*(गोबर्धनदास सब्ज़ीवाली के पास जाकर)*

**गोबर्धनदास** — क्यों माई, भाजी क्या भाव?

**सब्ज़ी वाली** — बाबा जी, टके सेर। निनुआ, मुरई, धनिया, मिरचा, साग, सब टके सेर।

**गोबर्धनदास** — सब भाजी टके सेर। वाह! वाह! बड़ा आनंद है। यहाँ सभी चीज़ टके सेर। (हलवाई के पास जाकर) क्यों भाई हलवाई, मिठाई कितने सेर?

**हलवाई** — बाबा जी! लड्डुआ, जलेबी, गुलाब-जामुन, खाजा सब टके सेर।

**गोबर्धनदास** — वाह! वाह! बड़ा आनंद है! क्यों बच्चा, मुझसे मसखरी तो नहीं करता? सचमुच! सब टके सेर?

**हलवाई** — हाँ बाबा जी, सचमुच सब टके सेर। इस नगरी की चाल ही यही है। यहाँ सब चीज़ें टके सेर बिकती हैं।

**गोबर्धनदास** — क्यों बच्चा! इस नगरी का नाम क्या है?

**हलवाई** — अंधेर नगरी।

**गोबर्धनदास** — और राजा का क्या नाम है?

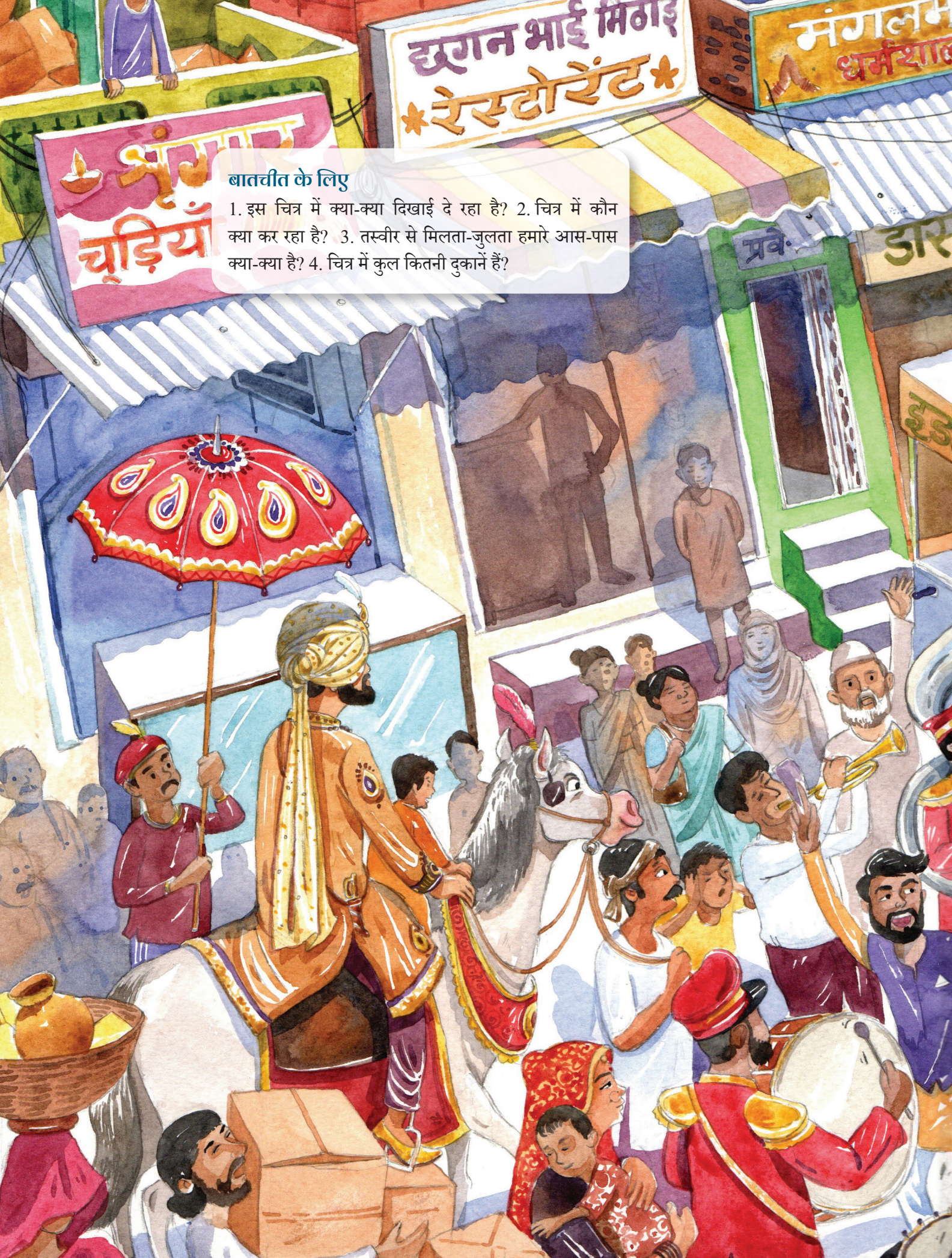
**हलवाई** — चौपट राजा।

**गोबर्धनदास** — वाह! वाह! अंधेर
नगरी चौपट
राजा, टके
सेर भाजी
टके सेर
खाजा।



*– भारतेंदु हरिश्चंद्र*

**शिक्षक-निर्देश** — इस संवाद को पढ़कर सुनाएँ। शिक्षक और सहभागी मिलकर नाटक मंचन करें या बारी-बारी से अपना संवाद पढ़ें।




**बातचीत के लिए**

1. इस चित्र में क्या-क्या दिखाई दे रहा है? 2. चित्र में कौन क्या कर रहा है? 3. तस्वीर से मिलता-जुलता हमारे आस-पास क्या-क्या है? 4. चित्र में कुल कितनी दुकानें हैं?


चाहत
ब्यूटी पार्लर
अन्ना डोसा
असली
दयाल
बैन्ड
दयाल
दया

# 3 हमारा रहन-सहन

## हम सीखेंगे

| ओ | औ | झ | द | ल | ग | क | य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|

- 21 से 50 तक की संख्याएँ पहचानना, पढ़ना और लिखना
- इकाई और दहाई समूहों में गिनना
- 50 तक की संख्याओं का जोड़ और घटा करना

## देखिए, पढ़िए और बातचीत कीजिए—



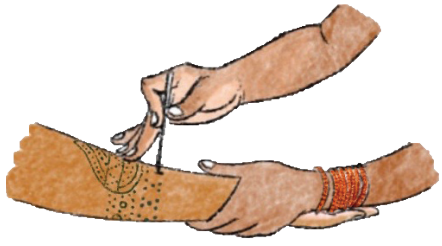
बारात



झूला



बाजा



गोदना



नाच



पान



खिलौने



माला



गुब्बारे

**शिक्षक-निर्देश**— सहभागियों से बारी-बारी सभी चित्रों की पहचान करवाएँ। चित्रों के नीचे उनसे संबंधित शब्द दिए गए हैं, उसके आधार पर शब्दों को अनुमान लगाकर पढ़वाएँ। चित्र के नीचे लिखे शब्दों को अँगुली रखकर पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

## बताइए और निशान लगाइए—

आप अकसर मेले में जाते होंगे। दिए गए चित्रों में से मेले में आपने क्या-क्या देखा? सही का निशान (✓) लगाइए—






चाट की दुकान

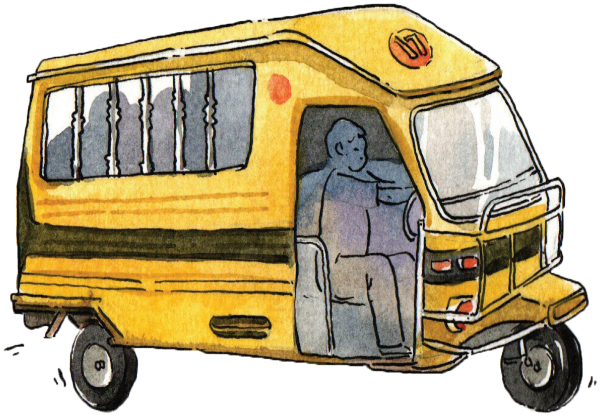
मिट्टी के बर्तनों की दुकान





चूड़ियों की दुकान

जलेबी



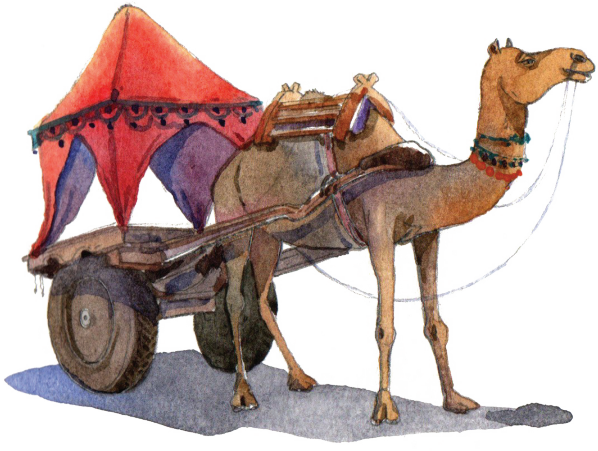
टैम्पो




निशानेबाजी



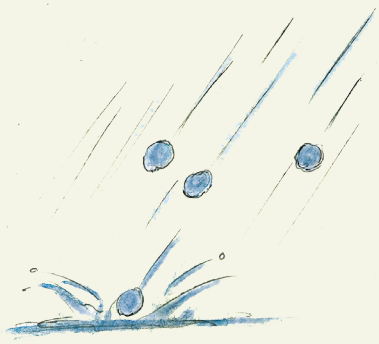
गन्ने का रस



ऊँटगाड़ी

## पढ़िए और लिखिए—

**ओ**



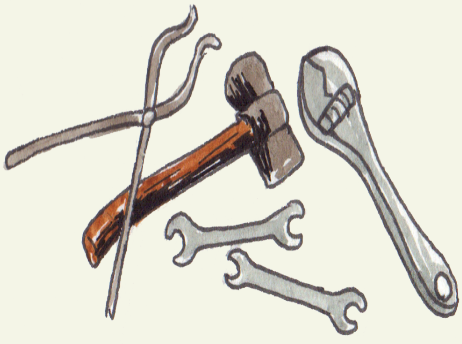
ओला



ओस

ओ

**औ**



औज़ार



औषधि

औ

**शिक्षक-निर्देश** — सहभागियों से बारी-बारी से चित्र की पहचान करवाएँ। चित्र के नीचे लिखे शब्दों को अँगुली रखकर पढ़ें और उनसे अक्षर भी लिखवाएँ।

# झ



झगड़ा



झरोखा

झ

# झा



झाड़ू



झाड़ी

झा

**शिक्षक-निर्देश** — चित्र देखकर शब्द पढ़ने में सहभागियों की मदद करें। उनसे अक्षर लिखवाएँ।

# झि



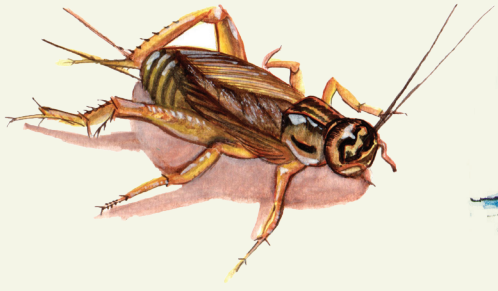
झिड़की



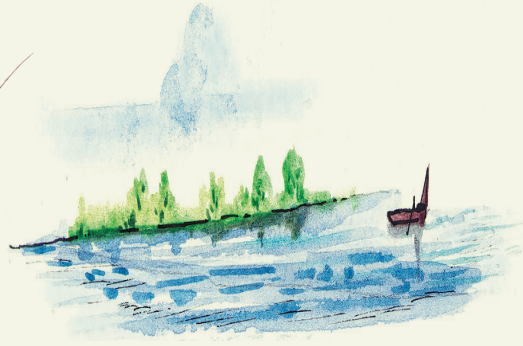
झिलमिल

झि

# झी



झींगुर

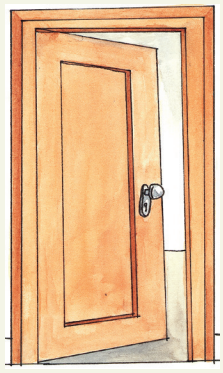


झील

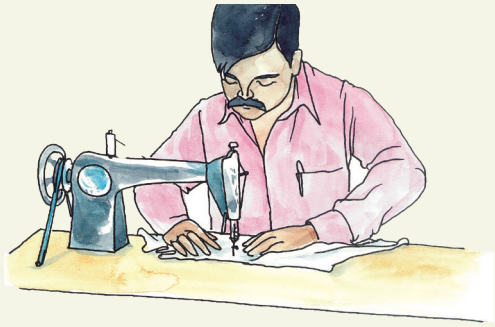
झी

**शिक्षक-निर्देश** — चित्र देखकर शब्द पढ़ने में सहभागियों की मदद करें। उनसे अक्षर लिखवाएँ। तारों की तस्वीर पर बात करते हुए झिलमिल, झिलमिलाना जैसे शब्दों पर पहुँचें।

# द



दरवाज़ा



दर्ज़ी

द

# दा



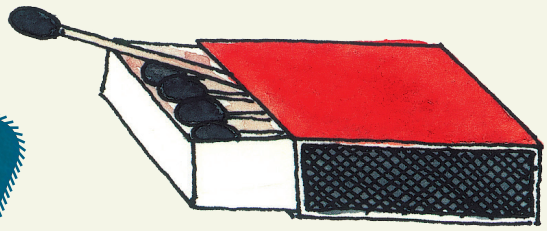
दाढ़ी



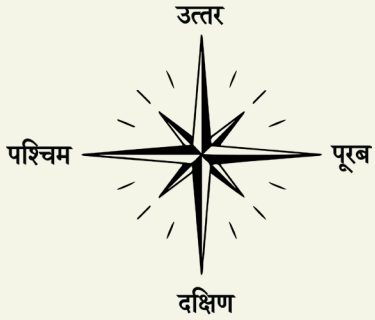
दातुन

दा

# दि



दियासलाई

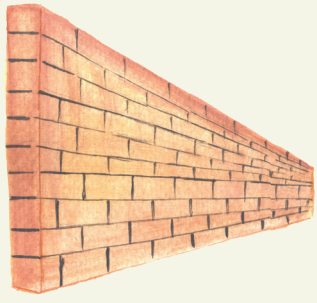



दिशा-सूचक

# दी



दीया



दीवार

## दौ



दौड़



दौलत

## य

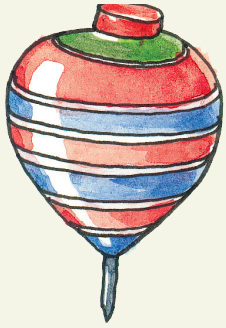


यज्ञ

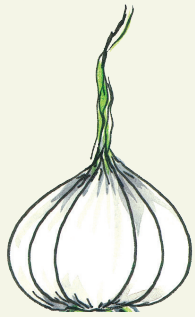


युवक

# ल



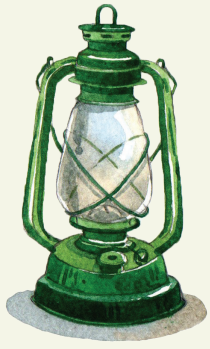
लट्टू



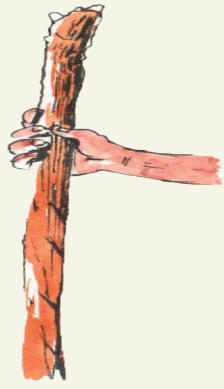
लहसुन

ल

# ला



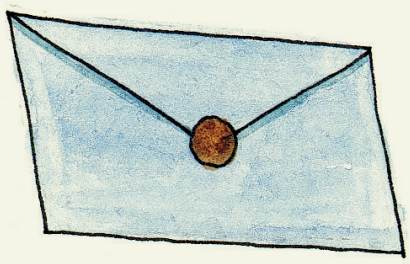
लालटेन



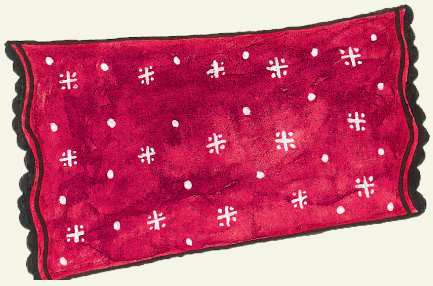
लाठी

ला

# लि



लिफ़ाफ़ा



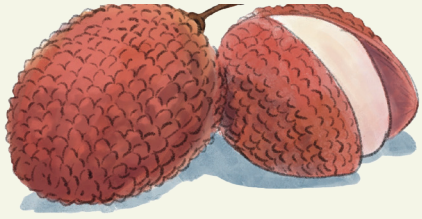
लिहाफ़



# ली



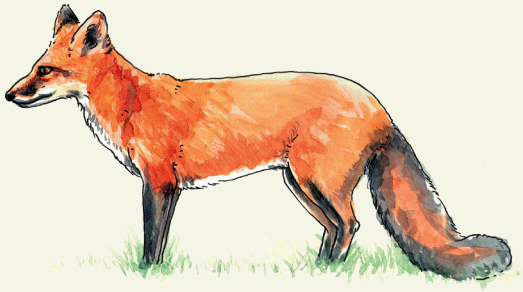
लीपना



लीची



## लो



लोमड़ी



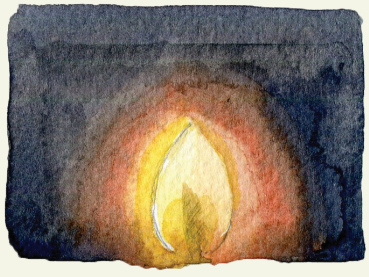
लोरी

लो

## लौ



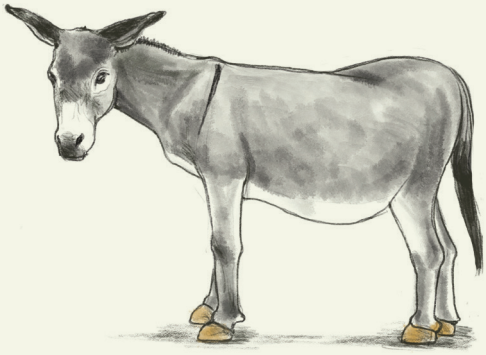
लौटना



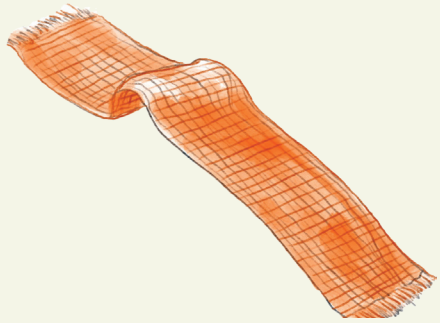
लौ

लौ

# ग



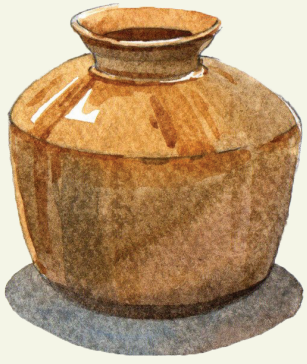
गधा



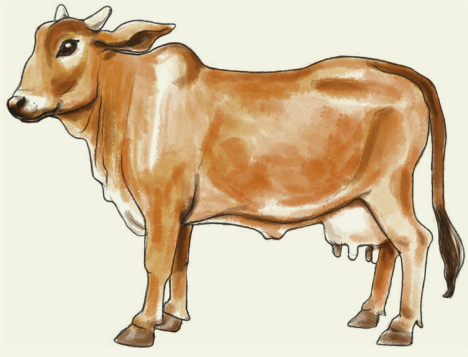
गमछा

ग

# गा



गागर

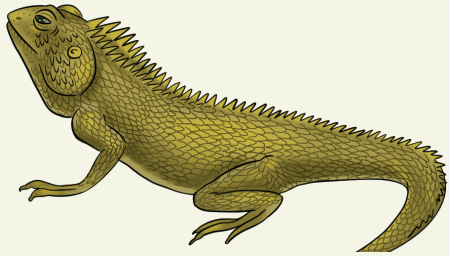


गाय

गा

गि





गिलहरी

गिरगिट

गी





गीला

गीत

गो



गोभी



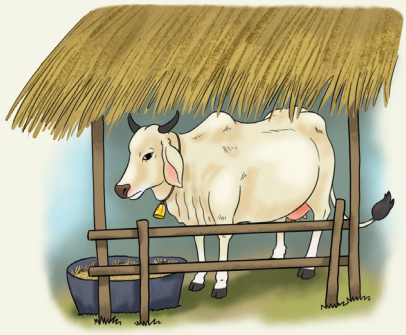
गोबर

गो

गौ



गौरैया



गौशाला

गौ

# क



करेला



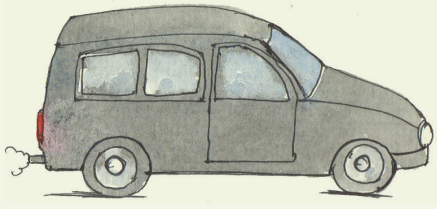
कठफोड़वा

क

# का



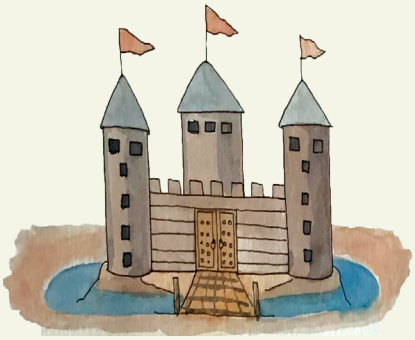
कारखाना



कार

का

कि



किला



किसान

की



कीड़ा

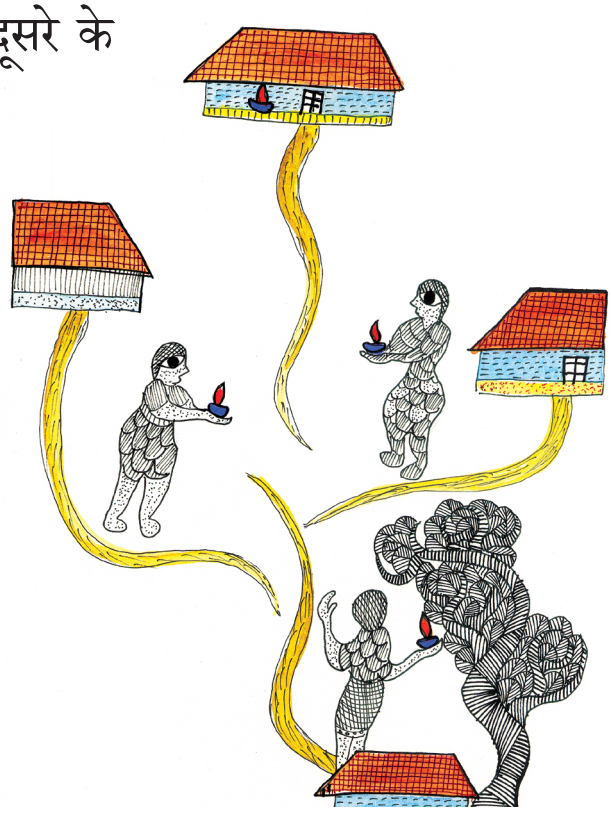


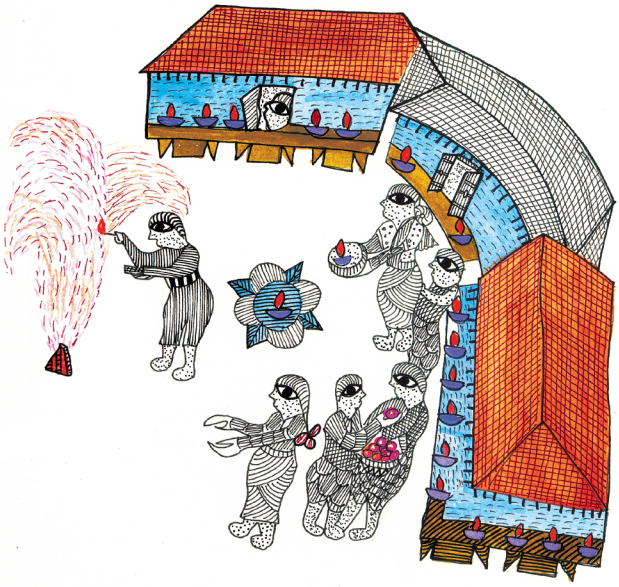
कीचड़

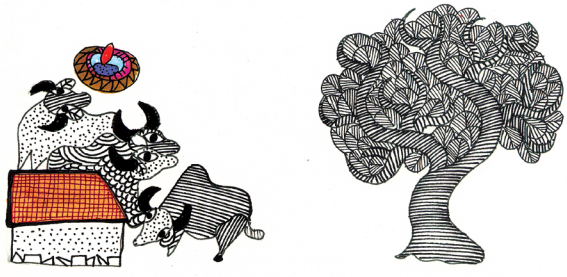
## मिलकर पढ़िए—

# दीवाली के दीये

दीवाली की रात आती है। लोग एक-दूसरे के घर छोटे दीये लेकर जाते हैं। दीये रखकर बोलते हैं— "मिजबान आए हैं, ध्यान रखिओ, उन्हें ठंड न लग जाए।"







मैंने दुनिया का इससे मीठा वाक्य नहीं सुना। अपने घर से दीपक ले जाकर अपने पड़ोसी के घर रख आना। आज इस वाक्य की मिठास इसका अर्थ जानकर और बढ़ जाती है कि हमारे रिश्तों में उजाला बना रहे और उसकी ऊष्मा ठंडी न पड़े।

**शिक्षक-निर्देश**— 'दीवाली के दीये' को पढ़कर सुनाएँ और सहभागियों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें।

इस बड़े शहर में मन तो बहुत करता है कि पड़ोसी के घर के बाहर दीये रख आऊँ और वही कहूँ जो मैंने बचपन में अपने पड़ोसी से सुना था— "मिजबान आए हैं, ध्यान रखिओ, उन्हें ठंड न लग जाए...।"

*— सुशील शुक्ल*

## पढ़िए और बताइए—

प्रश्न 1. दुनिया का सबसे मीठा वाक्य किसे कहा गया है और क्यों?

प्रश्न 2. आपके लिए दुनिया का सबसे मीठा वाक्य कौन-सा है और क्यों?

प्रश्न 3. क्या आपके यहाँ भी दीवाली से जुड़ी कोई खास परंपरा या रीति-रिवाज़ हैं? उसके बारे में बताइए।

प्रश्न 4. अपने इलाके में मनाए जाने वाले पसंदीदा त्योहारों के बारे में बताइए।

## मेरे शब्द—

**शिक्षक-निर्देश**— 'हमारा रहन-सहन' विषय पर बातचीत करें। सहभागियों से पूछकर उनके किसी त्योहार से जुड़े 3–4 शब्द लिखिए। ये शब्द उनकी अपनी भाषा के भी हो सकते हैं, जैसे– 'छठ' त्योहार से जुड़े शब्द– नहाए-खाए, कोसी भरना, रसियाव आदि।

## ■ शब्द ढूँढ़िए और लिखिए—

आज कमल ने खाने की कई चीज़ें बनाई हैं। खाने की चीज़ों के नाम पहचान कर उन पर घेरा लगाइए—



| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पनीर | प्याज़ | इमली | टमाटर | कटोरा | चरखा | बीन |
| थाली | गिलास | चटनी | पालक | दाल | चावल | ओस |
| रोटी | खिलौना | तितली | चटाई | रायता | नमक | पानी |
| जग | बेलन | तवा | गमला | चक्की | खीर | लोरी |

## ■ अब खाने की किन्हीं नौ चीज़ों के नाम लिखिए—

1. _____
2. _____
3. _____
4. _____
5. _____
6. _____
7. _____
8. _____
9. _____

## ■ शब्दों को ध्यान से देखिए, पढ़िए और लिखिए—

जिसमें **ओ** की आवाज़ है—

गाना आना ओक मीत

जिसमें **औ** की आवाज़ है—

औरत कहाँ मोर दराज़

जिसमें **दो** की आवाज़ है

दीवार दोना दादी कायदा

जिसमें **दौ** की आवाज़ है—

दीमक दलिया दौलत चौका

जिसमें **लो** की आवाज़ है—

लौटना लोग झील लोटा

जिसमें **ली** की आवाज़ है

मोल सिलाई चीनी कालीन

जिसमें **कौ** की आवाज़ है—

झरोखा कौवा मोबाइल रात

जिसमें **की** की आवाज़ है—

लकीर टिकट टिकटिक दाल

जिसमें **झो** की आवाज़ है—

झील झोला गया मगर

जिसमें **यो** की आवाज़ है—

बताना मलाई योगा रपट

**शिक्षक-निर्देश**— शब्द पढ़ने में सहभागियों की मदद करें। अलग-अलग आवाज़ों वाले शब्द लिखने के लिए कहें। ये आवाज़ें शब्द के शुरू में, बीच में या अंत में, हो सकती हैं।

## आइए, करके देखें—

दीवाली पर रमेश को एक-एक रुपये के बहुत सारे सिक्के मिले। उसने सिक्कों को नोट में बदलने के लिए दुकानदार को एक रुपये के 10 सिक्के दिए और बदले में दुकानदार ने उसे 10 रुपये का एक नोट दिया।





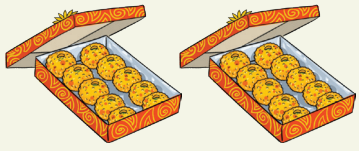

अगर रमेश दुकानदार को एक रुपये के 20 सिक्के देगा तो उसके बदले में उसे 10 रुपये के कितने नोट मिलेंगे? उतने ही नोटों पर घेरा लगाइए—

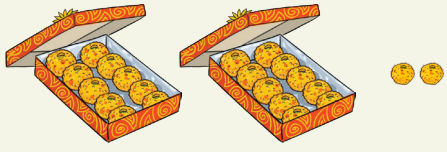


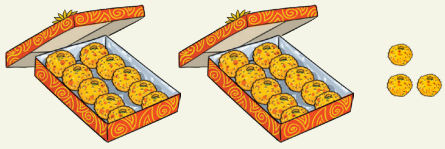


## आइए, जोड़कर गिनती सीखें—

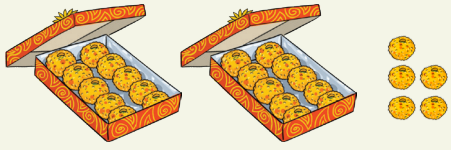
मिठाई के एक डिब्बे में 10 लड्डू हैं। देखिए, समझिए और लिखिए—

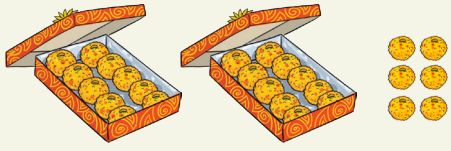
20 + 1 =  = 21

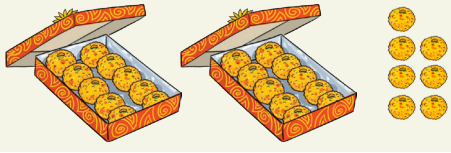
20 + 2 =  = 22

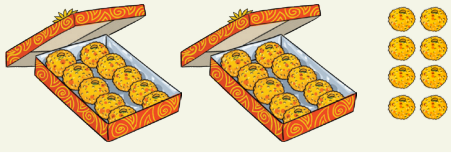
20 + 3 =  = 23

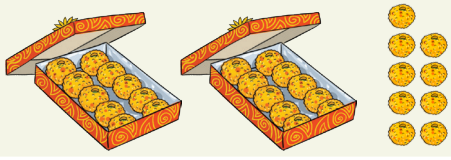
20 + 4 =  = 24

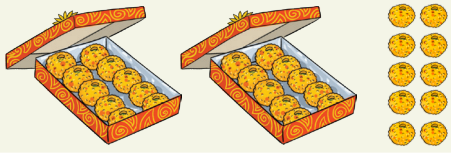
20 + 5 =  = 25

20 + 6 =  = 26

20 + 7 =  = 27

20 + 8 =  = 28

20 + 9 =  = 29

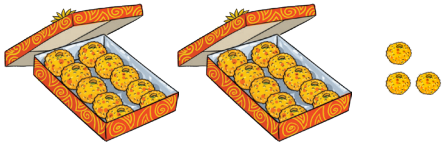
20 + 10 =  = 30

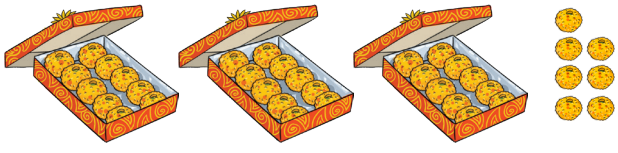
**शिक्षक-निर्देश** — इसी तरह आगे की संख्याएँ लिखने में सहभागियों की मदद करें।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 30 | + | 1 | = | 31 |
| 30 | + | 2 | = | 32 |
| 30 | + | 3 | = | 33 |
| 30 | + | 4 | = | 34 |
| 30 | + | 5 | = | 35 |
| 30 | + | 6 | = | 36 |
| 30 | + | 7 | = | 37 |
| 30 | + | 8 | = | 38 |
| 30 | + | 9 | = | 39 |
| 30 | + | 10 | = | 40 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 40 | + | 1 | = | 41 |
| 40 | + | 2 | = | 42 |
| 40 | + | 3 | = | 43 |
| 40 | + | 4 | = | 44 |
| 40 | + | 5 | = | 45 |
| 40 | + | 6 | = | 46 |
| 40 | + | 7 | = | 47 |
| 40 | + | 8 | = | 48 |
| 40 | + | 9 | = | 49 |
| 40 | + | 10 | = | 50 |

## आइए, जोड़कर गिनती सीखें—

 =

 =

## नीचे दिए गए 10 रुपये के नोटों और 1 रुपये के सिक्कों से कुल कितने रुपये बनते हैं सोचिए, समझिए और उत्तर लिखिए—

| | 10 रुपये के नोट | | 1 रुपये के सिक्के | | कुल रुपये |
|---|---|---|---|---|---|
| (क) |  | + |  | = | 34 |
| (ख) |  | + |  | = | |
| (ग) |  | + |  | = | |
| (घ) | | + |  | = | 22 |
| (ङ) | | | | = | 32 |
| (च) | | | | = | 40 |
| (छ) | | | | = | 42 |

**शिक्षक-निर्देश**— सहभागियों को बताएँ कि दस-दस के समूह में गिनने से बड़ी-बड़ी संख्याओं को गिनना आसान हो जाता है। यह समझ भी विकसित करनी है कि दस इकाइयों से मिलकर दहाई बनती है।

## ■ रहीम के पास 50 रुपये हैं, जिसमें 10 रुपये के चार नोट हैं और 1 रुपये के दस सिक्के हैं।






(क) रहीम ने अपनी बहन के लिए 15 रुपये की चूड़ियाँ लीं। उसने दुकानदार को कितने नोट और कितने सिक्के दिए?

10 रुपये का नोट

1 रुपये के सिक्के

| | दहाई | इकाई |
|---|---|---|
| = | | |

(ख) रहीम ने 22 रुपये की चाट भी खाई। दुकानदार को रहीम ने कितने नोट और कितने सिक्के दिए होंगे?

10 रुपये के नोट

1 रुपये के सिक्के

| | दहाई | इकाई |
|---|---|---|
| = | | |

(ग) रहीम के पास अब दस रुपये के कितने नोट और 1 रुपये के कितने सिक्के बचे हैं?

10 रुपये का नोट

1 रुपये के सिक्के

| | दहाई | इकाई |
|---|---|---|
| = | | |

**शिक्षक-निर्देश** — रुपये, मिठाई के डिब्बे एवं फूलों की माला द्वारा सहभागियों में इकाई तथा दहाई की समझ विकसित करने की एक शुरुआत की गई है। सहभागियों को स्वयं अपने अनुभवों से ऐसा करने का अवसर दें। ऐसी अन्य संख्याओं को लेकर सहभागियों को प्रोत्साहित करें कि वे उनमें कितने दस (दहाई) और कितने एक (इकाई) होंगे, पता लगाएँ।

- **आपके पास 10 रुपये और 1 रुपये के कुछ नोट या सिक्के हैं। बताइए, आप दुकानदार को वस्तुओं का मूल्य कैसे चुकाएँगे?**

| मूल्य | वस्तु | दस के नोट/सिक्के | 1 के नोट/सिक्के |
|---|---|---|---|
| ₹50 | टमाटर | | |
| ₹42 | बर्फ़ी | | |
| ₹29 | मग | | |
| ₹15 | केला | | |

- **मनु के पास 10-10 फूलों की 2 मालाएँ हैं और 4 खुले फूल हैं। उसके पास कुल कितने फूल हैं? दिए गए बॉक्स में सही संख्याएँ लिखिए तथा जोड़कर बताइए—**



दहाई इकाई

\+ =

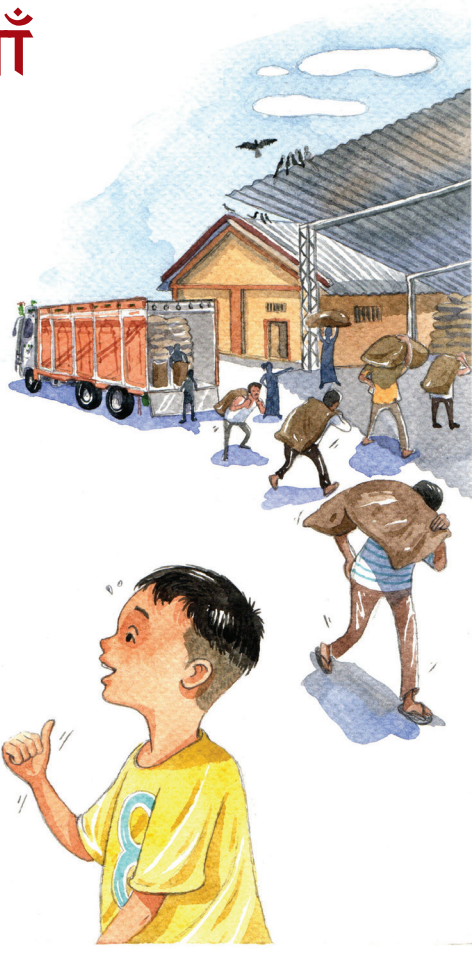
कुल

**शिक्षक-निर्देश**—₹50 में '₹' रुपये का प्रतीक है।

## ■ मिलकर पढ़िए—

# कहानियाँ

## 1



“हमारे मास्टरजी कहते हैं कि बेटा, खूब पढ़ो और खूब मेहनत करो। सबकी मेहनत से देश आगे बढ़ता है।”

“हाँ बेटा, जैसे— हमारे किसान, सैनिक, मज़दूर, खिलाड़ी आदि मेहनत करते हैं, देश का नाम रोशन करते हैं।”

“पापा, मैं भी मेहनत करके देश का नाम रोशन करूँगा।”

## ■ बातचीत के लिए—

1. आप या आपके परिवार के सदस्य क्या-क्या काम करते हैं? उन कामों को करने में आपके सामने क्या-क्या समस्याएँ आती हैं?
2. आपके हिसाब से कौन-कौन लोग बहुत मेहनत करते हैं?
3. शारीरिक श्रम वाले कामों के बारे में आमतौर पर लोगों की क्या राय रहती है? क्या आप उससे सहमत हैं? क्यों?

**शिक्षक-निर्देश**— सहभागियों के साथ श्रम, मज़दूरी, जेंडर आदि से जुड़े मुद्दों पर चर्चा करें। सहभागियों को बताएँ कि स्त्री-पुरुष या पति-पत्नी एक दूसरे के पूरक हैं, सहयोगी हैं। मेहनत करने के महत्व पर भी बातचीत करें।

## 2

"आपको घर के काम में मम्मी की मदद करते देख, मुझे बहुत अच्छा लगता है, पापा!"

"हाँ बेटा, एक-दूसरे की मदद से ही परिवार चलता है। पति-पत्नी जीवन-साथी भी हैं और सहयोगी भी।"

"हाँ पापा, मैं भी घर के कामों में मदद करूँगा।"

*— आयुष्मान गोस्वामी*



## बातचीत के लिए—

1. क्या आपके घर में स्त्री और पुरुषों के काम बँटे हुए हैं?
2. अगर स्त्री और पुरुष दोनों ही बाहर काम करते हैं तो घर पहुँचकर किसे, कौन-से दायित्व निभाने चाहिए और क्यों?
3. स्त्री और पुरुष के बीच बँटे हुए कामों की सोच समाज के लिए किस तरह घातक है?
4. दोनों कहानियों में बच्चों का जवाब समाज को बदलने में किस तरह मदद करेगा?

# वर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण ड़ ढ़

त थ द ध न

प फ ब भ म

य र ल व

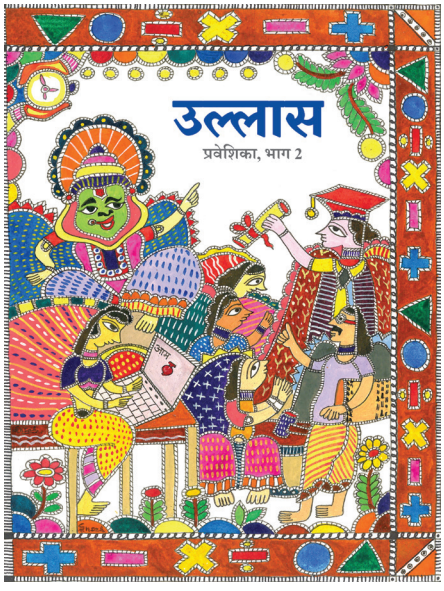
श ष स ह

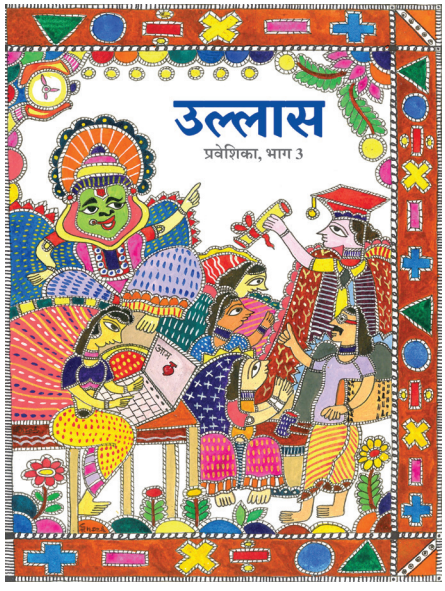
क्ष त्र ज्ञ श्र

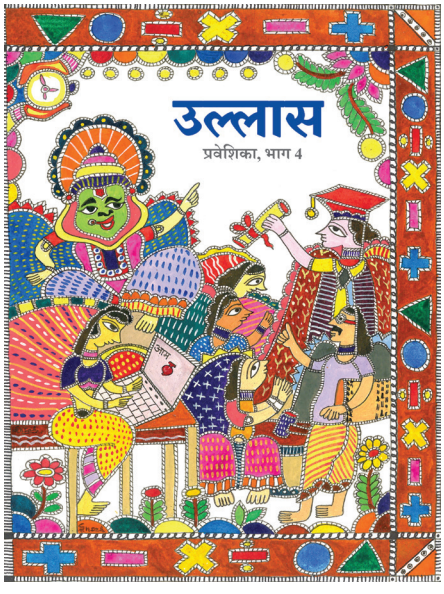
सा विद्या या विमुक्तये

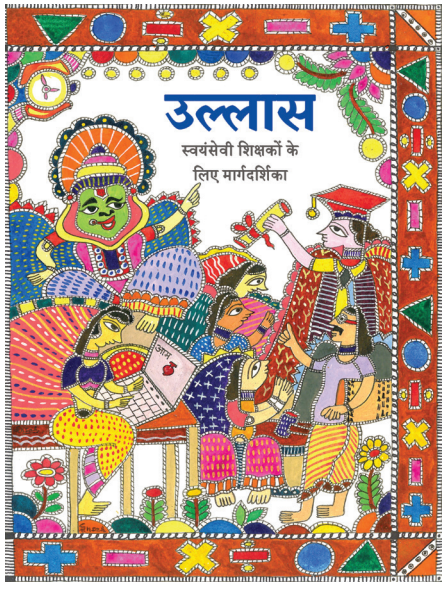
CELL FOR NATIONAL CENTRE FOR LITERACY

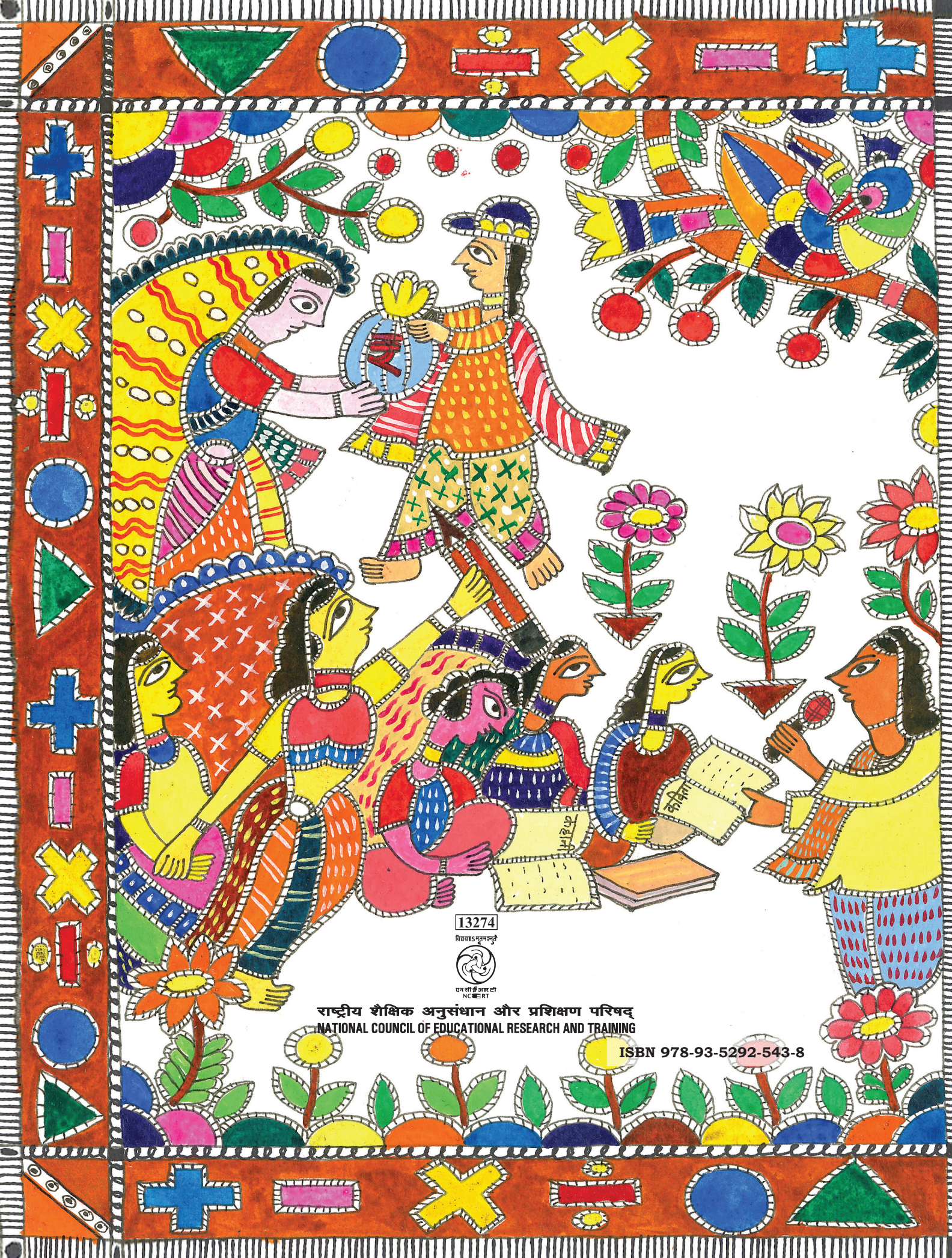
राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र–प्रकोष्ठ





13274

विद्ययाऽमृतमश्नुते

एनसीईआरटी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-93-5292-543-8